पात्र-परिचय

पुरुष—

१—सूत्रधार	नाटक-निर्देशक ।
२—कृष्ण	द्वारकाधीश, भगवान् ।
३—बलभद्र	कृष्णक जेठ भाय ।
४—प्रद्युम्न	कृष्णक पुत्र ।
५—नारद	देवर्षि ।
६—गरुड़	पक्षिराज ।
७—अनिरुद्ध	कृष्णक पौत्र, प्रद्युम्नक पुत्र, उषाक पति, नायक ।
८—चार	कृष्णक गुप्तचर ।
९—चार	चित्रलेखाक दूत ।
१०—बाण	बाणासुर, दैत्यराज, उषाक पिता ।
११—कुम्भाण्ड	बाणासुरक मन्त्री ।
१२—दौवारिक (द्वारी)	बाणासुरक द्वारपाल ।
१३—ज्वर	रोगराज, बाणक सहायक ।

स्त्री—

१—नटी	सूत्रधारक पत्नी ।
२—उषा	बाणासुरक पुत्री, नायिका ।
३—रामा	उषाक सखी, कुम्भाण्डक पुत्री ।
४—चित्रलेखा	उषाक सखी, गन्धर्वकन्या ।
५—दुर्गा	देवी भगवती दुर्गा ।
६—रुक्मिणी	कृष्णक पटरानी ।

म० म० हर्षनाथ झा विरचितम्

उषाहरणनाटकम्

[नान्दी - गीति]

राग इमन [गीत सं० - १]

जय जय कुमतिविनाशिनि देवि,
सभ अभिमत पुर तुअ पदसेवि ।
तनुरुचि निन्दित कुन्दक भास,
आननरुचि शशिबिम्ब उदास ।
आसन धवल कमल, शशि भाल,
श्वेत वसन लस, नयन विशाल ।
वीणादण्ड कलश धरु हाथ
जपमाला वर पुस्तक साथ ।
हर्षनाथकवि मनबथ भान,
भगवति करिय अभय वरदान ॥

उषाहरण नाटकक व्याख्या

[गीत सं०—१]

कुमति-विनाशिनी=अधलाह बुद्धिकें नष्ट कयनिहारि । अभिमत=अभिलषित । तनुरुचि......=देहक कान्ति सँ कुन्द फूलक छविकें निन्दित कयनिहारि (श्वेतवर्णा) । आननरुचि=मुँहक छवि सँ चन्द्रमाक मण्डल उदास होइत अछि । धवल=उज्जर । शशि भाल=कपार पर चन्द्रमा । श्वेतवसन=उज्जर वस्त्र । लस=शोभित होइछ ॥

(गीतार्थे श्लोकः)

या शुक्लाम्बुरुहासना सुनयना पूर्णेन्दुबिम्बानना
कुन्देन्दूज्ज्वलविग्रहा निज-करैः संबिभ्रती पुस्तकम् ।
वीणामक्षगुणं सुधाढ्यकलशम्ब्रह्मादिदेवार्चिता
सर्व्वाभीष्टफलप्रदा वितरतु श्रेयांसि सा शारदा ॥१॥

(नान्द्यन्ते)

सूत्रधारः—अलमतिविस्तरेण । आदिष्टोऽस्मि खण्डबलाकुलरत्नाकरसुधाकरेण कविपण्डितकुलहृदयसरसीरुहभृङ्गायमाणेन सकलराजकुलमुकुटरत्नायमानचरणकमलेन मिथिलामहीमहेन्द्रेण महाराज श्रीश्रीलक्ष्मीश्वरसिंहदेवदेवेन यथाऽस्मत्सभापण्डितेन कविपण्डितकुलतिलकायमानेन सकराढीकुलनन्दनेन श्रीहर्षनाथशर्म्मणा विरचितमभिनवमुषाहरणन्नाम नाटकमभिनीयतामिति । तद् गृहि-

---

(गीतक अर्थ मे श्लोक)

जे उज्जर कमलक आसनवाली सुन्दर आँखिवाली, पूर्णचन्द्र सन मुँहवाली कुन्द ओ चन्द्रमा सन उज्जर चमकैत देहवाली, अपना हाथसभक द्वारा पुस्तक, वीणा, रुद्राक्षमाला ओ अमृत भरल घैल धारण करैत, ब्रह्मा आदि देवता सँ पूजित भय सकल अभीष्ट फल देनिहारि छथि से श्रीसरस्वती मङ्गल वितरण करथु ॥१॥

[नान्दीक अन्त मे]

सूत्रधार—विशेष कहब उचित नहि । आदेश पओने छी—खण्डबलाकुलरूपी समुद्रक चन्द्रमास्वरूप, कवि-पण्डितसभक हृदयरूपी कमलक हेतु भौंरास्वरूप, सभ राजालोकनिक मुकुटक रत्न सँ युक्त चरणकमलवला, मिथिलाक राजा महाराज श्री श्रीमान् लक्ष्मीश्वर सिंहदेवदेव सँ जे हमर सभापण्डित, कवि ओ पण्डित मे श्रेष्ठ, सकराढ़ी-वंश मे उत्पन्न श्री हर्षनाथ शर्माक बनाओल नवीन 'उषाहरण' नामक नाटक

णीमाहूय संगीतकमवतारयामि तावत् (सर्व्वतः परिक्रम्य नेपथ्याभिमुखमवलोक्य)—प्रिये ! इहागम्यताम् ।

(प्रविश्य)

नटी—एसह्मि आणवेदु अज्जउत्तो ।

[एषाऽस्मि आज्ञापयतु आर्य्यपुत्रः ।]

सूत्र०—प्रिये ! पश्य सर्व्वर्तुसुसमृद्धोऽयं वसन्तसमयः । तथाहि—

सम्फुल्लन्नवमल्लिकापरिमल श्रीखण्डशैलानिलो
माद्यत्कोकिलकामिनीकलकलः कन्दर्पबाणानलः ।
भृङ्गालीकुलकाकली नववधूश्रेणीकटाक्षावली
निश्शङ्कम्भुवि सर्व्वतः प्रसरति प्राप्ते वसन्तोत्सवे ॥२॥

तदेनं वसन्तसमयमधिकृत्य सङ्गीतकमनुतिष्ठतु भवती ।

नटी—जहाणवेदि अज्जउत्तो [यथा आज्ञापयत्यार्यपुत्रः ।] (इति गायति) ।

खेलाउ । तेँ घरवाली केँ बजाय संगीत प्रारम्भ करैत छी । (चारूभर घूमि नेपथ्य दिस देखि) प्रिये ! एम्हर आउ ।

(प्रवेश कय)

नटी—इयेह छी आज्ञा देल जाओ आर्यपुत्र ।

सूत्र०—प्रिये ! देखू, चारूभर ई वसन्त समय भरल पुरल अछि । जेना कि—

फुलाइत नवीन बेली फूलक सुगन्धि, मलयपर्वतक बसात, मत्त कोइलीक शब्द, कामबाणक आगि, भ्रमरी सभक गुञ्जन, नववधू सभक कटाक्षक पंक्ति—ई सभ वसन्त समय अयला पर पृथ्वी पर निश्चिन्त सर्वत्र पसरय लगैछ ।२।

तेँ एहि वसन्त समयक विषय लय अहाँ संगीत गाउ ।

नटी—जे आज्ञा देथि आर्यपुत्र । (गबैत छथि ।)

(राग वसन्त) [गीत सं०--२]

मदननरेश विजय मनकाज,
लय परिजन अनुगत ऋतु राज।
शोभित अलितति मरकतमाल,
केशर मणिमय—छत्र विशाल।
मारुत-कम्पितमाधवि-पुंज,
नाचत रसमय भवन—निकुंज।
अलिकुलगुंजित गानविलास,
चम्पक किंशुक दीपकभास।
कोकिल कलरव नृपतिनिदेश,
चलत समीरन दण्ड उदेश।
निरखि सुरत विघटन अपराध,
करत कोप तँह मानक बाध।
रसमय हर्षनाथकवि भान,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान॥

अपि च— [गीत सं०--३]

उसरल अगभरि शिशिर पसार,
बसल सरस ऋतुपति बनिजार।

[गीत सं०—२]

मदन नरेश=राजा कामदेव। अनुगत ऋतुराज=वसन्तक संग। अलितति=भौंराक समूह। मरकत=मणि विशेष। मारुत-कम्पित=हवा सँ झुलाओल। अलिकुल=भौंराक समूह। किंशुक=पलाश। कलरव=स्वर। नृपति-निदेश=राजाक आज्ञा सँ (कोइलीक स्वररूपी)। समीरन=हवा। दण्ड उदेश=दण्ड देबाक हेतु (विरहिणीकेँ)॥

आओरो— [गीत सं०—३]

उसरल=हटल। पसार=बेचबाक पसरल वस्तु। ऋतुपति

पसरल सओदा मधुरस फूल,
अभिनव सौरभ, प्रेम अमूल।
तौलत दक्षिण पवन विचारि,
भमि भमि माँगत भ्रमर भिखारि।
पिककुल करत दलालक काज,
गाहक तरुणी तरुणसमाज।
हसित वचन लोचन दय दाम,
किनत सिनेह रतन सब ठाम।
रसमय हर्षनाथकवि भान,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान॥

सूत्र०— प्रिये साधु गीतम्

(नेपथ्ये--इदो इदो पिअसहीओ।) [इत इतः प्रियसख्यौ]

सूत्र०— (आकर्ण्य) कथमियं बाणपुत्री उषा कुम्भाण्डदुहित्रा रामया चित्रलेखयाऽप्सरसा च समं किमपि मन्त्रयन्ती इत एवाभिवर्त्तते। तदेहि, आवामप्यनन्तरकरणीयाय सज्जीभावाय। (इति निष्क्रान्तौ)।

[इति प्रस्तावना।]

बनिजार=वसन्तरूपी बनियाँ। दक्षिण-पवन=मलयानिल। पिककुल=कोइलीसभ। दलाल=सौदा पटओनिहार॥

सूत्र०- प्रिये! उत्तम गाओल।

[नेपथ्य मे — एम्हरहि बाटेँ प्रियसखी।]

सूत्र०—(सुनि) की ई बाणासुरक पुत्री उषा, कुम्भाण्डक बेटी रामाक ओ अप्सरा चित्रलेखाक संग किछु परामर्श करैत एम्हरहि अबैत छथि? तँ आउ, हमहुँ दुनू गोटए अग्रिम कार्यक हेतु तैयार होइ।

(दुहू बहार भेलाह।)

[इति प्रस्तावना]

[तखन दुहू सखीक संग उषा प्रवेश करैत छथि।]

(ततः प्रविशति सखीभ्यां सहिता उषा ।)

गीत सं०--४ राग कल्याण

तड़ित-विनिन्दक सुन्दर वेस,
गजगामिनि कामिनि परवेस ।
अलक कलित आनन अभिराम,
जनि घन-वलित विमल हिमधाम ।
अधर ललित, नासा अति शोभ,
कीर कौसल जनु बिम्बक लोभ ।
निरखि युगल कुच पङ्कज काँति,
चललि रोमावलि मधुकर पाँति ।
अविरल नूपुर-किङ्किणि-राव,
मदनविजय जनु सामग गाव ।
रसमय हर्षनाथकवि गाव,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझु भाव ।।

राग कान्हड़ा, गीत सं०--५

उपचित हृदय अनङ्ग, चललि रमणि सखिसङ्ग ।
मन्द मन्द पग धार, जनि आलस कुचभार ।
अलस नयन चित चोर, जनि मद भरल चकोर ।

[गीत सं०—४]

तड़ित-विनिन्दक=बिजलोकाक निन्दा करयवला स्वरूप । गजगामिनि=हाथी सनक गतिवाली ।। अलक-कलित=केश सँ शोभित । आनन अभिराम=मुँह सुन्दर लगैछ । घनवलित=मेघ सँ शोभित । हिमधाम=चन्द्रमा ।। कीर=सुगा । बिम्ब=तिलकोड़क फड़ ।। रोमावलि मधुकर=पेटक रोमरेखा रूपी भौंरा । अविरल=सघन । राव=शब्द । मदन-विजय=कामदेवक विजय । सामग=सामवेदक गायक ।।

[गीत सं०—५]

उपचित=बढ़ल । अनङ्ग=कामदेव । अलस-नयन=अलसायल

बोल वचन हसि मन्द, अमिय बरिस जनु चन्द ।
हर्षनाथ कवि भान मिथिलापति रस जान ।।

रामा—सहि बाणपुत्ति ! उक्कण्ठिदाव्व लक्खीअसि भोदी । ता किं कोवि पुरिसो तुज्झ हिअए वट्टदि ।

[सखि बाणपुत्रि ! उत्कण्ठितेव लक्ष्यते भवती, तत्किं कोऽपि पुरुषस्तव हृदये वर्त्तते ।]

उषा—(सप्रणयकोपम्)किम्पि हिअए गदुअ जहा तहा जप्पसि । ता इदो दूरं ओसर (इति पुष्पमालया ताडयति) ।

[किमपि हृदये कृत्वा यथातथा जल्पसि । तदितो दूरमपसर ।]

चित्रलेखा—सहि बाणपुत्ति ! अप्पणो सहीअणे का लज्जा, ता कधेहि सच्चं ।

[सखि बाणपुत्रि ! आत्मनः सखीजने का लज्जा, तत्कथय सत्यम् ।]

उषा—(सलज्जमधोमुखी संस्कृतमाश्रित्य)—

गौरीशिवजलक्रीडा यदा दृष्टा मया सखि ! ।
ततः प्रभृति केनापि हेतुना व्याकुलम्मनः ।।३।।

रामा—कामेणेत्ति भणिदव्वं ।

[कामेनेति भणितव्यम् ।]

आँखि । अमिअ=अमृत ।।

रामा—सखी बाणपुत्री ! अहाँ उत्कण्ठित सनि लगैत छी, तँ की कोनो पुरुष अहाँक हृदय मे छथि ?

उषा—(स्नेहयुक्त कोप कय) किछु मन मे राखि अण्ट सण्ट बजैत छह, तेँ एतय सँ दूर भागह । (फूलक मालासँ मारैत छथि ।)

चित्र०—सखी बाणपुत्री ! अपन सखी सँ कोन लाज ? तेँ सत्य कहू ।

उषा—(लाज करैत नीचाँ मुहेँ संस्कृतक आश्रय लय)—

गौरी ओ शिवक जलविहार जखन हम देखल, हे सखि ! तखन सँ कोनो कारणेँ हमर मन व्याकुल अछि ।।३।।

रामा—काम सँ से कहू ।

उषा— (सलज्जमधोमुखी तिष्ठति)।

चित्र०—सहि ! देईए गोरीए पसादेण सव्वं सुलहं होदि, ता तामेव्व पसादेदुं गच्छह्म। (इति सर्व्वा देवीगृहमुद्दिश्य गमनं नाटयन्ति।)

[सखि ! देव्या गौर्य्याः प्रसादेन सर्व्वं सुलभं भवति, तत्तामेव प्रसादयितुं गच्छामः।]

[सोहनी, गीत सं०-६]

सखि सब सङ्ग लय मन अनुमानी,
गिरजा पूजन चललि सेआनी।
अछत चानन सिन्दुर फूले,
बेलपत्र नव कय समतूले।
पुजलनि मन दय भगति बढ़ाए,
कयलनि बिनती माथ नवाए।
मँगलनि वर पुनु दुहु कर जोरी,
आसा मोर परिपूरथु गौरी।
हर्षनाथकवि भन मन लाए
सबखन भगवति रहथु सहाए॥

(ततः प्रविशति परितुष्टा गौरी)

उषा—(लाजें नीचांमुहें रहैत छथि।)

चित्र०—सखी ! देवी गौरीक प्रसाद सँ सब सुलभ होइछ, तें हुनके प्रसन्न करबाक हेतु चलैत चलू।

[सभ केओ देवीक मन्दिरक हेतु जयबाक अभिनय करैत छथि।]

[गीत सं०—६]

सेआनी=चतुर नायिका। अनुमानी=विचारि। समतूले=जुटाय॥

[तखन सन्तुष्ट भेलि गौरी प्रवेश करैत छथि।]

सोहनी, गीत सं०-७

निज जन आरति हरण उदेश,
हिमगिरिनन्दिनि देल परवेश।
जनिक चरण युग दरशन लागी,
हरि हर करथि कतेक तप जागी।
भगति विवश सेह दरशन देला,
बाणकुमरि अभिमत बुझि लेला।
कहलनि माधव शुचिदल पाए,
हरि तिथि सपन मिलत पति आए।
ई कहि अन्तर्हित भय गेली,
बाणकुमरि सुनि हरषित भेली।
हर्षनाथ कवि भन मन लाए,
सबखन भगवति रहथु सहाए॥

(इति निष्क्रान्ता।)

रामा—सहि बाणपुत्ति ! सम्पुण्णमणोरहा तुमं देइए पसादेण।

[सखि बाणपुत्रि ! सम्पन्नमनोरथा त्वं देव्याः प्रसादेन।]

उषा—(सलज्जमधोमुखी तिष्ठति)।

[गीत सं०—७]

आरति=दुःख। हिमगिरिनन्दनि=पार्वती। हरि-हरि=विष्णु ओ महादेव। भगति-विवश=भक्ति सँ विवश भय। माधव=वैशाख मासक। शुचिदल=शुक्लपक्ष। हरि तिथि=एकादशी। अन्तर्हित=लुप्त॥

(गौरी बहार भय गेलीहि।)

रामा—सखी बाणपुत्री ! पूर्णमनोरथ भेलहुँ अहाँ देवीक कृपा सँ।

उषा—(लाजें नीचामुहें रहैत छथि।)

चित्र०—सहि बाणपुत्ति ! तुज्झ तादस्य घरे आणन्दझुणी सुणीअदि, ता अह्मे वि तहिं गच्छह्म ।

[सखि बाणपुत्रि ! तव तातस्य गृहे आनन्दध्वनिः श्रूयते, तद्वयमपि तत्र गच्छामः ।]

(इति निष्क्रान्तास्सर्वाः ।)

इति उषावरलाभो नाम प्रथमोऽङ्कः ॥

अथ द्वितीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशति बाणासुरः)

(राग परज, गीत सं०—८)

बाणनृपति अब देल परवेश
कांपथि धरती कच्छप शेष ।
सहस बाहु, गिरि सदृश शरीर,
नयन निरखि केओ रहय न थीर ।
माद्यपान कर लोचन लाल,
काल सदृश तनु, वदन कराल ।
सकल भुवन जल तृण सम जान,
भुजबल राख अधिक अभिमान ।

चित्र०—सखी बाणपुत्री ! अहाँक पिताक घर मे आनन्दक शब्द सुनि पड़ैछ, तेँ हमरहुलोकनि ओतहि जाइ ।

[सभ बहार भेलि]

इति उषाक वर लाभ नामक प्रथम अङ्क समाप्त ॥

द्वितीय अङ्क

[बाणासुर प्रवेश करैत छथि ।]

[गीत सं०—८]

गिरि सदृश=पहाड़क समान । तनु=देह । कराल=डराओन । तृण-

रसमय हर्षनाथकवि गाव,
श्रीलक्ष्मीश्वरसिंह बुझु भाव ॥

बाणः—कः कोऽत्र भोः !

(प्रविश्य)

दौवारिकः—जअदु जअदु देओ ।

[जयतु जयतु देवः ।]

बाणः—दौवारिक सत्वरं मन्त्रिराज कुम्भाण्डं प्रवेशय ।

दौवारिकः—यधाणवेदि देओ । (इति निष्क्रान्तः) ।

[यथाज्ञापयति देवः ।]

(राग परज, गीत सं०—९)

दूत वचन सुनि नृपति निदेश,
शङ्कित मन्त्रिराज परवेश ।
मन गुनि कत-विध करथि विचार
कोन परि सेवब नृप-दरबार ।
निरखि हमर अति सुन्दर रीति
किबहु होएत नृप मानस प्रीति ।
कोदहु हमर जानि किछु दोष,
बाणनृपति मन उपजत रोष ।
अनुछन मन चिन्तित हो आज
परम कठिन नृप सेवन काज ।

सम=खड़क समान ॥

बाण के छथ एतय अछि ?

[प्रवेश कय]

दौवारिक—देवक जय हो, जय हो ।

बाण—दौवारिक ! झटदय मन्त्रिराज कुम्भाण्डकेँ प्रवेश कराबह ।

दौवारिक—देवक जे आज्ञा । (बहार भय गेल ।)

[गीत सं०—९]

निदेश=आज्ञा सँ । शङ्कित=शङ्का सँ युक्त । कत-विध=कतेको प्रकारक ॥

हर्षनाथकवि मन दय गाव

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझ भाव ॥

कुम्भाण्डः—जयति जयति महाराजः।

बाणः—मन्त्रिराज, इहास्यताम (इत्यालिङ्ग्योपवेशयति)।

कुम्भाण्डः—(उपविश्य) देव, हर्षविशेषो लक्ष्यते, तत्किं हरप्रसादेन कोऽपि वरो लब्धः ?

बाणः—अथ किम्।

कुम्भाण्डः—विशेषेण कथय।

बाणः—कार्त्तिकेयदत्तध्वजपतनेन महद्युद्धमिति।

कुम्भाण्डः—महाराज, कुसृष्टिपुष्टोऽसि, न भद्रं कृतं, नूनमनेन वरेणासुरकुलं क्षयं यास्यति।

बाणः—(सरोषम्) आः पाप कुम्भाण्ड! ब्रह्माण्डस्फोटनं वाचा करोषि। नाहं कस्मादपि बिभेमि। शृणु रे संग्रामकातर!

कुम्भाण्ड—महाराज विजयी होथु।

बाण—मन्त्रिराज! एतय बैसू। (आलिङ्गन कय बैसबैत छथि।)

कुम्भा०—(बैसि) देव! विशेष आनन्द बुझाइछ की महादेवक प्रसाद सँ कोनो वर पाओल अछि ?

बाण—त आओर की ?

कुम्भा०—विशेष रूपेँ कहू।

बाण—कार्तिकेयक देल ध्वजाक खसला सँ महान् युद्ध होयत।

कुम्भा०—महाराज! अधलाह कार्य मे पड़ि गेल छी, नीक नहि कयल। निश्चित एहि वरदान सँ असुरकुलक क्षय होयत।

बाण—(तमसाय) आः पाप कुम्भाण्ड! वचन सँ हमर ब्रह्माण्ड फोड़ि रहल छह। हम ककरहु सँ नहि डराइत छी। सुन रे युद्ध सँ डरयनिहार!—

इन्द्रादयो मम न सत्त्वाङ्गसङ्गोपना पराः।

परे के सन्ति भुवने ये योत्स्यन्ति मया सह ॥४॥

कुम्भाण्डः—यथा वदति देवः।

(ततः प्रपतति मयूरध्वजः।)

बाणः—(दृष्ट्वा सहर्षं) पश्य पश्य मन्त्रिराज! पतितो मयूरध्वजः। तन्नूनमचिरेण मम बाहुसहस्रधारणं सफलतामेष्यति। तदेहि, गौरीशङ्कराभ्यां पुष्पाञ्जलिदानाय।

(इति निष्क्रान्तौ)

(इति विष्कम्भकः।)

(ततः प्रविशति रामाचित्रलेखाभ्यां सहिता पुष्पसङ्गचिह्निता उषा)

उषा—(सवैक्लव्यम्)—(राग कलिङ्गड़ा, गीत सं०—१०)

सपन देखल एक नागर धीर,

तन्हि मोर धर्षित कयल शरीर।

हमरा डरेँ इन्द्र आदि देवता अपन देह नुकाबय लगैत छथि आ आन के एहि भुवन मे अछि जे हमरा संग युद्ध करत ? ॥४॥

कुम्भा०—जे कहैत छी देव सएह ठीक।

[तखन मयूर-ध्वज खसैत अछि।]

बाण—(देखि सहर्ष) देख, देख, मन्त्रिराज! खसल मयूरध्वज। तेँ आब निश्चय हमर हजार बाँहि धारण करब सफल होयत। तँ आउ, गौरी-शंकर केँ पुष्पाञ्जलि देबाक हेतु।

[दुहू बहार भेलाह।]

[इति विष्कम्भक]

[तखन रामा ओ चित्रलेखाक संग पुष्प-सम्पर्कक चिह्न सँ युक्त उषा प्रवेश करैत छथि।]

उषा—(विकलता सँ)—

[गीतसं०—१०]

नागर धीर=चतुर नायक गम्भीर। धर्षित=मर्दित। चिकुर=केश।

फुजल चिकुर कुजल मोर चीर,
अभरण एक रहल नहिं थीर ।
आनन मलिन घाम भरि गेल,
कोन पुरुष मोहि सङ्गम देल ।
भल छल मरण होइत वरु आज,
के की कहत तकर हो लाज ।
रसमय हर्षनाथकवि भान,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥

(इति शिरसि हस्तविधाय कलङ्कबाधानाटयति)।

रामा—(सविश्रम्भम्) सहि ! समस्ससिहि समस्ससिहि । ण क्खु कोवि तुज्झ दोसो हुविस्सदि । सुमिरेहि, सुमिरेहि देइए गोरिए वयणं । (इति सर्वं स्मारयति ।)

[सखि ! समाश्वसिहि समाश्वसिहि । न खलु तव कोपि दोषो भविष्यति । स्मर स्मर देव्या गौर्या वचनम् ।]

उषा—(सानन्दलज्जं स्मरणमभिनयति)।

रामा—सहि ! लद्धमणोरहा तुमं । ता कधेहि विसेसेण सविणवुत्तं ।

[सखि ! लब्धमनोरथा त्वं, तत्कथय विशेषेण स्वप्नवृत्तम् ।]

उषा--(सलज्जं गीतेन कथयति) –

चीर = वस्त्र । अभरण = गहना ॥

(माँथ पर हाथ दय कलङ्क लगबाक बाधाक अभिनय करैत छथि ।)

रामा—(आश्वस्त करैत) सखी ! धैर्य धरू । अहाँक कोनो दोष नहि होयत । मोन पाड़ू देवी गौरीक वचन । (सभटा स्मरण करबैत छथि ।)

उषा—(आनन्द ओ लाज सहित मोन पाड़बाक अभिनय करैत छथि ।)

रामा—सखी ! अहाँ मनोरथ केँ तँ पाओल । आब कहू विशेषरूपेँ स्वप्नक वृत्तान्त ।

उषा—(लज्जा सहित गीतक द्वारा कहैत छथि:—)

सोहनी, गीत सं०--११

सखि हे, यतन दय सुनु मोर बानी,
करिय उपाय हृदय अनुमानी ।
सपन समय एक सुन्दर रूपे,
देखल नागर मदन सरूपे ।
तसु मुख लाख तनु पुलकित भेला,
तन्हि पुनि हसि मोहि कर लेला ।
रसमय वचन बोलथि पुनु धीरे,
कोन परि रहओ तखन चित थीरे ॥
तखनुक अवसर कि कहब तोही,
कहइत लाज निवारय मोही ।
रसमय हर्षनाथकवि भाने,
नृपलक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

अपि च— (राग मालव, गीत सं०--१२)

सुनु सखि ओ रे सरस देखल जनि सुपुरुष,
तसु मुख, सुमरि सुमरि होअ कत दुख ।
तनि बिनु ओ रे जत अछि एहि जगती तल,
शीतल, से सब दुख दय बीतल ।
जग भरि ओ रे, घर घर हँसथ सकल जन,
मोर मन, तन्हि बिनु थिर नहि कखन ।
तन्हि पहु ओ रे, होएत समागम कोनपरि,
हरिहरि, करिय उपाय यतन भरि ।

[गीत सं० –११]

यतन = यत्न । नागर = चतुर नायक । मदन-सरूपे = कामदेवक स्व-रूपमे । कर लेला = हाथ धयलनि । निवारय = रोकैछ ॥

आओर, [गीत सं०—१२]

जगतीतल = संसार मे । हरि हरि = हाय हाय ! यतन भरि = यथाशक्

छनछन ओ रे, मदन-दहन दह मोर तनु,
सखि सुनु, आब न जिउब हम तन्हि बिनु।
रसबुझ ओ रे, लक्ष्मीश्वरसिंह गुणमय,
मनदय, हर्षनाथ भन रसमय ॥

(इति विरहवेदनामभिनयति ।)

रामा—सहि ! समस्ससिहि समस्ससिहि[1] ।

[सखि ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि ।]

(चित्रलेखाम्प्रति) सहि चित्तलेहे ! को उवाओ हुविस्सदि ।

[सखि चित्रलेखे ! क उपायो भविष्यति ।]

चित्र० - कीरिसो अविज्जादजणसंगमोवाओ ।

[कीदृशोऽविज्ञातजनसङ्गमोपायः ।]

उषा - एवं चिअ मज्जीअणं पि दुल्लहं हुविस्सदि (इति मूर्च्छति)।

[एवञ्चेन्मज्जीवनमपि दुर्लभं भविष्यति ।]

रामा - समस्ससिहि समस्ससिहि [समाश्वसिहि समाश्वसिहि ।]

(इत्युत्थाप्य नलिनीदलेन वीजयति) ।

चित्र० - (जलं सिञ्चति)।

भणि। मदन-दहन = कामदेवरूपी अग्नि। दह = जरबैछ। तनु = देह ॥

(विरह-वेदनाक अभिनय करैत छथि।)

रामा—सखि ! धैर्य धरू, धैर्य धरू। (चित्रलेखाक प्रति) सखी चित्रलेखा ! कोन उपाय होयत ?

चित्र०—अज्ञात व्यक्तिक संगमक उपाय केहन होयत ?

उषा—जँ एना हो तँ हमर जीवनो दुर्लभ होयत। (मूर्च्छित होइत छथि।)

रामा—धैर्य धरू, धैर्य धरू। (उठायकेँ पुरइनिक पात सँ हौँकैत छथि।)

चित्र०—(जल छिटैत छथि।)

उषा - (संज्ञां लब्ध्वा सवैक्लव्यम् ।) --

राग मालव, गीत सं० — १३

पहु बिनु किछु नहि भावय रे, कि करब परकारे ।
कोन परि होएत समागम रे, सखि करहु बिचारे ॥
मलय पवन नलिनी-दल रे, चानन घनसारे ।
परसि अधिक तनु तापय रे, जनि बिधुम अँगारे ॥
सुमरि सुमरि तसु आनन रे, पीयुष सम बानी ।
अनुछन रहत बिकल मन रे, सखि सुनहु सेआनी ॥
जओ नहि होयत समागम रे, कि कहब सखि आने ।
आनि गरल घोरि पीउब रे, हम तेजब पराने ॥
हर्षनाथ कविशेखर रे, रसमय इहो गावे ।
लक्ष्मीश्वरसिंह गुणमय रे, मन दय बुझु भावे ॥

(ततश्चन्द्रकरस्पर्शेन दुःखमनुभूय मूर्च्छति । सख्यौ वीजयतः ।
पुनः संज्ञां लब्ध्वा गीतेन कथयति)--

सोहनी, गीत सं०--१४

सखि सखि ! करहु एकर उपचारे ।
रहत विकल मन, दहत सतत तन, चान किरण दुरवारे ॥

उषा—(होश पाबि बिकलता सहित)—

[गीत सं०—१३]

भावय = सोहाइछ। परकारे = उपाय। मलय-पवन = मलय पर्वतक बसात। नलिनी-दल = पुरइनिक पात। घनसार = कर्पूर। परसि = छूबि। तनु तापय = देहकेँ तप्त करैछ। बिधुम = बिनु धूआँक। पीयुषसम = अमृतक समान। गरल = विष ॥

[तखन चन्द्रमाक किरणक स्पर्श सँ दुःख पाबि मूर्च्छित होइत छथि। दुहु सखी पंखा हौँकैत छथि। फेर होश पाबि गीतक द्वारा कहैत छथि -]

[गीत सं०—१४]

1—दहत = जरबैछ। सतत = हरदम। तन = देह। दुरवारे = अस:-

कुमुदबन्धु छिरसिन्धुतनूभव कुन्द कुसुम सम धामे ।
एहन चान तन, दहत सतत क्षण, असित हृदय परिनामे ।।१।।

(एतदर्थे श्लोकः)

क्षीराब्धिजातः कुमुदस्य बन्धुः कुन्दप्रसूनप्रतिमांशुरेषः ।
तथापि चन्द्रस्तनुदाहकारी स एष हृत्कल्मषताल्स्वभावः ।।५।।

बड़वानल जकाँ जबर गोइ धरु, किए जलनिधि नहि चाने ।
कालकूट सम जानि मदनहर, किय न कयल तसु पाने ।।२।।

(अत्रार्थे श्लोकः)

और्वाग्निवन्नो शशिनं जुगोप पयोधिरेनं विषवन्मुमोच ।
क्रूरन्तथाप्येनमुदीक्ष्य शम्भुः पपौ दयालुर्विषवन्न कस्मात् ।।६।।

राहुदसन बिच जाय जिबए पुनि, शशि विरहिन जिवघाती ।
तसु डर यमहु डेराथि जगत मह, जे जन अति उतपाती ।।३।।

I कुमुद-बन्धु = कुमुद फूलक मित्र । छिर सिन्धु तनूभव = क्षीरसमुद्रक देह सौं उत्पन्न । कुन्द कुसुमसमधामे = कुन्द-फूलक समान छविवला । असित-हृदय = कारी हृदय (चन्द्रमाक उक्त कुरय हृदय मे कलङ्करूप कालिमाक परिणाम थिक) ।।

(एहि अर्थ मे श्लोक)—

ई चन्द्रमा क्षीरसागर सौं उत्पन्न, कुमुदक बन्धु ओ कुन्द फूलक छविक समान किरणवला छथि तथापि देह मे ताप उत्पन्न करैत छथि—से ई हिनक हृदयक कालुष्यक (कारी रहनाइक) स्वभाव थिक ।। ।।५।।

II—बड़वानल = समुद्रक आगि । कालकूट = विष । मदनहर = महादेव । तसु = हुनक (चन्द्रमाक) ।।

(एहि अर्थमे श्लोक)—

जँ समुद्र एहि चन्द्रमाकेँ बड़वानल जकाँ नुकाय नहि लेलनि, अपितु विष जकाँ छोड़ि देलनि तँ हिनका क्रूर देखि दयालु महादेव विष जकाँ पीबि कियेक नहि गेलाह ।।६।।

(एतस्मिन्नर्थे श्लोकः)

स्वर्भानुदष्टोऽपि जहाति नासून्वियोगिनां प्राणहरः सुधांशुः ।
वितर्कयामि स्फुटमत्र तेन यमोऽपि दुष्टान्नितरां बिभेति ।।७।।

धैरज धय रहु, अचिर मिलत पहु, होएत सुशीतल चाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस, हर्षनाथकवि भाने ।।४।।

(इति मूर्च्छति ।)

रामा—(उषाया नाडीन्निरूप्य संस्कृतमाश्रित्य)

कदाचिद्वहते नाडी कदाचित्स्थिरताङ्गता ।
एतन्निरूपणेनास्या ज्ञायते चरमा दशा ।।८।।

हा हदह्वि, को उआओ हुबिस्सदि । [हा हताऽस्मि, क उपायो भविष्यति ।] (चित्रलेखाम्प्रति) सहि चित्तलेहे ! पेक्ख पेक्ख सहीए अवत्थं । [सखि चित्रलेखे ! पश्य पश्य सख्या अवस्थाम् ।]

III—राहुदसन-बिच = राहुग्रहक दाँतक बीच मे । शशि = चन्द्रमा । जिवघाती = प्राणनाशक । यमहु = यमराजो ।।

(एहि अर्थ मे श्लोक)—

राहुसौं ग्रसित भेलहुँ पर ई चन्द्रमा प्राण नहि त्यागैत छथि, अपि तु वियोगीक प्राण हरैत छथि ताहि सौं स्पष्ट तर्क करैत छी जे यमराजो दुष्टसभ सौं अत्यन्त डराइत छथि ।।७।।

IV—अचिर = शीघ्र । सुशीतल = अतिठण्ढा ।।

(मूर्च्छित होइत छथि ।)

रामा—(उषाक नाड़ी देखि संस्कृतक आश्रय लय)—

नाड़ी कखनहुँ चलैत आ कखनहुँ स्थिर भय जाइछ । एकरा देखला सौं हिनक अन्तिम दशा बुझाइछ ।।८।।

हाय ! मुइलहुँ !! कोन उपाय होयत ? (चित्रलेखाक प्रति) सखी चित्रलेखा ! देखू, देखू सखीक अवस्था !

सोहनी, गीत सं०--१५

कि कहब हे सखि ! धनिक विशेष,
आब न जिउति अतिबिरह कलेश ।
परस दगध सेज कि कहब तोहि,
तें तसु जीव न निश्चय मोहि ।
तसु तनुवेदन देखल न जाय,
बसन भूषण तें भूमि लोटाए ।
नाड़िक भेद बुझय अनुकूल,
कर कङ्कण गेल बाहुक मूल ।
कोदहु जिबइत अछि सुकुमारि,
चुभय चिकुर उर परसि विचारि ।
रसमय हर्षनाथकवि भान,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥
(इत्युभे विलपतः ।)

चित्र०—हा हदह्मि ! कधं उण सहीए पियअणं जाणिस्सं ।
[हा हताऽस्मि ! कथं पुनः सख्याः प्रियजनं ज्ञास्यामि ।]

रामा—(संस्कृतमाश्रित्य)—

[गीत सं०—१५]

धनिक विशेष = धन्य एहि सखीक हालति । परस दगध सेज = छिनक ओछानक स्पर्श सँ देह जरैछ । तनुवेदन = देहक वेदना । वसन = वस्त्र । चिकुर उर परसि = केश छातीक स्पर्श कय ।

(दुहू विलाप करैत छथि ।)

चित्र०—हाय मुइलहुँ ! कोना कय सखीक प्रिय व्यक्ति कें जानब ?

रामा—(संस्कृतक अवलम्बन कय)—

मुहुर्भ्रान्तिर्मुहुर्मूर्च्छा मुहुस्संज्ञा मुहुर्धृतिः ।
सखीहृदयबाधा हि हन्तास्मास्वपि दृश्यते ॥९॥

(चित्रलेखाप्रति गीतेन)

सोहनी, गीत सं०--१६

हे सखि हे सखि ! करहु उपाय,
बिरह वेदन सखि ! सहलो न जाय ।
सयन पुरुषरूप मन अवधारी,
लय पट त्रिभुवन लिखहु विचारी ।
सब तरु चीन्हहु तोहिं नारी,
अपन सखी कहु लागु गोहरी ।
सखि मोर तसु रूप मन अवधारी,
पट देखि निज प्रिय चिन्हति विचारी ।
रसमय हर्षनाथ कवि भाने,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

चित्र०—(सशिरःकम्पं) सहि ! रमणिज्जं क्खु मन्तिदं [सखि ! रमणीयं खलु मन्त्रितम् ।] (इति तथा करोति) ।

बारबार भ्रम, बारम्बार मूर्च्छा, बारम्बार होश ओ बारम्बार धैर्य—ई सभ जे सखीक हृदय मे बाधा उपस्थित अछि से हाय! हमरहु सभ मे देखल जाइछ ॥९॥

(चित्रलेखाक प्रति गीतक द्वारा)—

गीत सं०—१६

सयन = शयनकक्ष मे । पुरुषरूप मन अवधारी = मन मे सुन्दर पुरुष सभक रूपक ध्यान कय । पट = चित्रपट = चित्र लिखबाक कपड़ा । त्रिभुवन = तीनहु लोक मे स्थित युवकके । सबतरु = सभठाम । सब = सभ कें । गोहारी = रक्षाक उपाय । तसु रूप = तनिक (मनमे स्थित पुरुषक) रूपकें । अवधारी = विचारि ॥

चित्र०—(माथ हिलबैत) सखी ! बड़ दीब विचार कयलहु अछि । (तहिना करैत छथि ।)

'झंझौटी, गीत सं०-- १७

लेख कर गहि ललित लिखनी सकल संग अनाए ओ ।
लिखथि मन दय चित्रलेखा विविध पट्ट बनाए ओ ॥
देव दानव सिद्ध चारण यक्ष राक्षस किन्नरा ।
लिखल रघुकुल सकल यदुकुल अनेक अछि जग नरवरा ॥
लेख कर गहि बाणतनया देखल पट मनलाए ओ ।
निरखि अनिरुध रूप मन गुनि अँगुरि देल देखाए ओ ॥
कयल सखिसँ अधिक विनती करहु सङ्ग उपाए ओ ।
हर्षनाथ विचारि भन गिरिजा चरण हिय लाए ओ ॥

चित्र०—(सशोकं) एसो क्खु समुद्दमज्झणिम्मिदद्दोआरवदीणअरमज्झे वसइ, ता कठिणो अस्स सङ्गमोवाओ । [एष खलु समुद्रमध्यनिर्मितद्वारवतीनगरमध्ये वसति, तत्कठिनोऽस्य सङ्गमोपायः ।

उषा—(सोत्कण्ठम्)—

(राग योगिया, गीत सं०—१८)

जाह द्वारिका आजे, तेजि लाजे, मन दय करु मोर काजे ॥
योगबल तोहँ सब ठामे, निज कामे, करहु गमन अनुपामे ॥

[गीत सं०—१७]

लेख = लिखैत अछि । कर गहि = हाथ सँ पकड़ि । ललित लिखनी = सुन्दर कलम (तूलिका) । नरवरा = उत्तम मनुष्य । अनिरुध = अनिरुद्ध (श्रीकृष्णक पौत्र) ॥

चित्र०—(शोक सहित) ई तँ समुद्रक बीच मे बनाओल द्वारका-नगर मे बसैत छथि । तेँ हिनक समागम कठिन अछि ।

उषा—(उत्कण्ठा सहित)—

[गीत सं० - १८]

योगबल = योगसिद्धिक बलेँ । अनूपामे = अपूर्व । बेआजे = लाथ ।

---

१ • संझौटी' ।

जौं तोहँ करहु बेआजे, मोर काजे, हम न जिअब सखि ! आजे ॥
दक्षिणपवन भेल बामे, परिनामे, हनय मदन मोहि ठामे ॥
हर्षनाथकवि भाने, परमाने, मिथिलापति रस जाने ॥

(इति चित्रलेखाचरणयो निपतति)

चित्र०—(आलिङ्ग्योपवेश्य सकरुणम्)—

(दोहा)

जाए द्वारका आज हम कामतनय यदुवीर ।
आनि मिलाएब तोहि संग, धरहु सुचेतनि ! धीर ॥

(इति सत्वरगमनमभिनयति) ।

उषा—(निरूप्य) कधं गदा ज्जेव पिअसही चित्तलेहा ? [कथं गतैव प्रियसखी चित्रलेखा ?[(रामाम्प्रति संस्कृतमाश्रित्य)--

बहुविनयवितानैः प्रेरिता चित्रलेखा
कुसुममृदुलदेहा कामिनी दूरदेशम् ।
अविदितबहुमारा द्वारकां सा प्रतस्थे
परहितकरणेच्छु र्न स्मरत्यात्मबाधाम् ॥१०॥

दक्षिण पवन = दछिनाही हवा (मलयानिल) । बामे = विपरीत । परिनामे = अन्तिम अवस्था । हनय मदन = कामदेव मारैत छथि ॥

(चित्रलेखाक पयर पर खसैत छथि ।)

चित्र०—(आलिङ्गन कय बैसाय करुणापूर्वक)—

(दोहा)--

कामतनय = कामदेवक पुत्र अनिरुद्ध केँ । यदुवीर = यदुवंश मे पराक्रमी ॥ (शीघ्र जयबाक अभिनय करैत छथि ।)

उषा—(देखि) की चल गेलीहि प्रियसखी चित्रलेखा ? (रामाक प्रति संस्कृतक आश्रय लय)—

बहुत विनतीक विस्तार सँ प्रेरित भय फूलसनक कोमल देहवाली सुन्दरी चित्रलेखा बहुत भार उठएबा सँ अपरिचितो होइत दूरदेश द्वारकाक हेतु प्रस्थान कयलनि । ओ दोसराक हित करबाक इच्छुक भय प्राण-संकटोक चिन्ता नहि करैत छथि ॥१०॥

रामा – सहि ! सच्चं । [सखि ! सत्यम् ।]

उषा – ता अह्मा वि जहा तहा समअ-णअणत्थं पुप्फवाडिअं गच्छह्य ।

[तदावामपि यथा तथा समयनयनार्थं पुष्पवाटिकां गच्छावः ।]

[इति निष्क्रान्ते]

इति चित्रलेखाप्रस्थापनो नाम द्वितीयोऽङ्कः ।।

अथ तृतीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशति पथि श्रमम्नाटयन्ती चित्रलेखा)

चित्र० – एस समुद्दो, इअं सा दोआरिया, इणं खु अणिरुद्धस्स घरं, ता एत्थ प्पविशामि [एष समुद्रः, इयं सा द्वारका, इदं खलु अनिरुद्धस्य गृहं तदत्र प्रविशामि ।] (इति प्रवेशमभिनयति ।)

(ततः प्रविशति चिन्ताकुलोऽनिरुद्धः ।)

अनि० – (सवैक्लव्यम्)

रामा – सखी ! सत्य ।

उषा – तँ अपनोलोकनि जेना-तेना समय बितयबाक लेल फुलवाड़ी चली ।

(बाहर भय गेलि ।)

।। इति चित्रलेखाक बिदा करब नामक दोसर अंक समाप्त ।।

तृतीय अङ्क

[तखन बाट मे परिश्रमक अभिनय करैत चित्रलेखा प्रवेश करैत छथि ।]

चित्र० – ई समुद्र थिक । ई ओ द्वारिका थिक । ई अनिरुद्धक घर थिक । तँ एतय प्रवेश करैत छी । (प्रवेश करबाक अभिनय करैत छथि ।)

[तखन चिन्ता सँ व्याकुल अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि ।]

अनिरुद्ध – (विकलतापूर्वक) हाथीक समान कोमल गतिवाली, तथा क्रोधहु मे

मातङ्गेन समानकोमलगतिः कोपे तथा कोमला

मृद्वङ्गी मृदुभाषिणी मृदुवया हास्येऽपि या कोमला ।

स्वप्ने मां समुपागता विधिवशात्सर्वात्मना कोमला

जाता सा कठिना कथं मम पुनर्हृत्वैव चित्तङ्गता ।।११।।

अपि च–

सोहनी, गीत सं०–१६

हरि हरि देखल अवरुप रामा ।

देखइत जनम सुफल कय मानल, पूरल लोचनकामा ।।

तड़ित चपल रुचि कठिन कनकमय-बल्ली करि अवधाने ।

निजकौशल परगासन कञ्जज, तसु तनु कर निरमाने ।।

मदन-धनुष हर-नयन-दहन तहँ, श्यामल केशर शेषे ।

लखि चतुरानन भाग जुगल करि, कए तसु भौंह विशेषे ।।

मृग अञ्जन खञ्जन मदगञ्जन, लोचन सम निज कांती ।

मानल पङ्कज तें जनि कंजज, निज पद देल तसु छाती ।।

कोमल, कोमल अङ्गवाली, कोमल वचनवाली कोमल अवस्थावाली, हँसियो मे कोमल, तथा सभ तरहेँ जे कोमल भए भाग्य सँ हमर स्वप्न मे हमरा लग अयलीहि से कठोर कोना भय गेलीहि आ हमर चित्तकेँ चोरायकेँ चल गेलीहि ।।११।।

आओर, [गीत सं०–१६]

अवरुप रामा = अपूर्व सुन्दरी । लोचन-कामा = आँखिक मनोरथ ।। तड़ित-चपल-रुचि = बिजलोका सन चञ्चल कान्ति सँ युक्त । कनकमय बल्ली = सोनाक लती । अवधाने = निश्चय । परगासन = प्रकाशित करबाक लेल । कञ्जज = ब्रह्मा ।। मदन-धनुष = कामदेवक धनुष । हरनयन-दहन = महादेवक आँखिसँ जरलाक कारण । श्यामल-केशर-शेषे = कारी फूलक रेशा (सूत) क रूप मे अवशेष रहल । चतुरानन = ब्रह्मा । भाग जुगल = दुइ भाग (जरल कारी धनुषक) ।। मृग ... ... तसु छाती = हरिण आँजन ओ खञ्जनक

अमल-कमलमुख लखि रजनीकर, अन्तर श्यामल कांती ।
कनककुम्भ कुच-युगल दम्भ लखि, विदलित दाड़िम छाती ॥
दाड़िम बीज दशन, बन्धुकमय दशनवसन निरमाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥

अपि च—

राग देश, गीत सं० -- २०

रे मोर प्राण पियारी, सुकुमारी ।
कतय मिलति वरनारी ॥
सपन दरश मोहि भेला, विह देला ।
कओन हरन कय लेला ॥
लोचन विषमय बाने, नहि आने ।
जे मोर हरल पराने ॥
कि करब हम परकारे सनसारे ।
तनि बिनु लागु अन्हारे ॥
हर्षनाथकवि भाने, परमाने ।
मिथिलापति रस जाने ॥

(इति चिन्तामभिनयति ।)

गर्बकेँ चूर करय बला जे नायिकाक आँखि तकरा सनक अपन कान्ति मानलक कमल, तेँ ब्रह्मा (कञ्जज) खिसियाय केँ कमलक छाती पर पयर रखने छथि । अमल = स्वच्छ । रजनीकर = चन्द्रमा । अन्तर = हृदय मे । कनक-कुम्भ = सोनाक घैल सनक । कुचयुगल दम्भ = दुनू स्तनक गर्बकेँ । विदलित = फाटि गेल । दशन = दाँत । बन्धुकमय = मधुरीक फलक स्वरूप । दशन-वसन = ठोर ।

आओर,

[गीत सं०—२०]

वरनारी = श्रेष्ठ रमणी । विह = भाग्य, विधाता । सनसारे = संसार मे । परकारे = उपाय ॥

(चिन्ताक अभिनय करैत छथि ।)

चित्र०—कधं एसो सो अणिरुद्धो किम्पि चिन्तअन्तो चिट्ठदि, ता पावदस्स हिअअं तक्केमि । [कथमेषोऽसावनिरुद्धः किमपि चिन्तयन् तिष्ठति, तद्यावदस्य हृद्गतं तर्कयामि ।] (इत्यपवार्य तिष्ठति ।)

अनि०—(पुनः 'मातङ्गेने'त्यादि पठति ।)

चित्र०—(निपुणं निरूप्य) णं एदेण अस्स वअणोवण्णासेण तक्कीअदि, एदेणावि जणेण अह्माणं सा पिअसही सविणे दिट्ठा, ता णिस्सङ्कं उवसप्पामि [ननु एतेनास्य वचनोपन्यासेन तर्क्यते, एतेनापि जनेनास्माकं सा प्रियसखी स्वप्ने दृष्टा, तन्निःशङ्कमुपसर्पामि ।] (इत्युपसर्पति) ।

अनि०—(दृष्ट्वा सहर्षं)कथमियं चित्रलेखा ? चित्रलेखे एषोऽनिरुद्धः प्रणमति ।

चित्र०— सम्पुण्णमणोरहो होहि । [सम्पूर्णमनोरथो भव ।]

अनि०—(स्वगतम्) परमनुगृहीतोऽस्मि । (प्रकाशं)चित्रलेखे ! सकलैश्वर्यवत्याः सिद्धयोगिन्याः किमत्रागमने प्रयोजनं भवत्याः ।

चित्र०—(गीतेन कथयति ।)--

चित्र०-- की ई थिकाह अनिरुद्ध किछु चिन्ता करैत ठाढ़ छथि ? तँ कनेक हिनक हृदयक भाव बुझैत छी । (अड़ भय रहैत छथि ।)

अनि० -- (फेर "मातङ्गेन" श्लोक सं०--१९ पढ़ैत छथि ।)

चित्र० -- (नीक जकाँ देखि) निश्चय हिनक एहि वचनक उद्गार सँ तर्क कयल जाइछ जे एहो व्यक्ति हमर प्रियसखीकेँ स्वप्न मे देखलनि अछि । तँ निर्भीक भय लग जाइत छी । (लग जाइत छथि ।)

अनि० - (देखि सहर्ष) की ई चित्रलेखा थिकीह ? चित्रलेखा ! ई अनिरुद्ध अहाँ केँ प्रणाम करैत छथि ।

चित्र० -- पूर्णमनोरथ होउ ।

अनि० - (स्वगत) अत्यन्त अनुगृहीत (कृपाप्राप्त) छी । (प्रकाश) चित्रलेखा । सभ ऐश्वर्य सँ युक्त सिद्धयोगिनी अहाँक एहिठाम अयबाक की प्रयोजन ?

चित्र० -- (गीतक द्वारा कहैत छथि)--

राग खम्माच, गीत सं०--२१

सखि मोर बाणकुमारी, तुअ गुण लुबुधलि से वरनारी ॥
मदन समय तोहि देखो, मिलन मनोरथ करए विशेषी ॥
तुअ बिनु धरय न धीरे, चेत न चिकुर चेतय नहि चीरे ।
अनुछन जप तुअ नामे, मन दय तनिक पुरिअ मनकामे ॥
हर्षनाथकवि भाने, नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

अपि च--

राग केदार, गीत सं०--२२

कि कहब तनिक विशेस, माधव ! कहितहु होअ कलेस ॥
आनन करतल राखि, माधव ! दिवस गमावथि झाँखि ॥
मदनदहन दह देह, माधव ! लागु विपिन सम गेह ॥
निरखि सरसशशि काप, माधव ! मलयपवन तनु ताप ॥
तुअ सङ्गम अभिलाष, माधव ! छनभरि जीवन राख ॥
अचिर चलिअ तसु धाम माधव ! पुरिअ तनिक मनकाम ॥
हर्षनाथकवि भान, माधव ! मिथिलापति रस जान ॥

अनि०—चित्रलेखे ! भवत्याः प्रियसखी मयापि स्वप्ने सङ्गता । तदवधि निर्दयः कन्दर्पो मां विशिखैर्निकृन्तति । तस्मादनुगृहाण मां शोणितपुरनयनेन।

[गीत सं०--२१]

लुबुधलि = लोभायलि । बरनारी = उत्तम रमणी । धीरे = धैर्य । चेत न चिकुर = केश कें नहि सम्हारि पबैछ । चीरे = वस्त्र ॥

आओर, [गीत सं०--२२]

विशेष = अधिक दुर्दशा । कलेश = दुःख । आनन करतल = मुँहकेँ हाथ पर । झाँखि = पछताय । मदन-दहन दह = कामदेवरूपी आगि जरबैत अछि । विपिन सम गेह = वन सन घर । सरस-शशि = सरस चन्द्रमाकेँ ॥

अनि० - चित्रलेखा ! अहाँक प्रियसखीक हमहु स्वप्नमे साक्षात्कार कयल । तखन सँ निर्दय कामदेव हमरा बाणसँ कटैत छथि । तेँ हमरा

(इति चित्रलेखापादयो निपतति)।

चित्र०—(आलिङ्ग्योपवेश्य) कधं अणुग्गहेऽब्भत्थणा ? एव्वं होदु । [कथमनुग्रहेऽभ्यर्थना ? एवं भवतु ।] (इत्यनिरुद्धेन सार्द्धं गमनमभिनयति) ।

चित्र०—पेक्ख यादवणन्दण ! शोणिअपुरं पत्तं । इदं क्खु पिअसहीए णिज्जणं शअणघरं, ता एत्थ तुमं चिट्ठ । अहं पिअसहीं आणेमि । [प्रेक्षस्व यादवनन्दन ! शोणितपुरं प्राप्तम् । इदं खलु प्रियसख्या निर्ज्जनं शयनगृहं, तदत्र त्वं तिष्ठ । अहं प्रियसखीमानयामि । (इति निष्क्रान्ता) ।

अनि०—

सोरठा, गीत सं०--२३

कखन आओति धनि पासे, पुरत हृदय अभिलासे ॥
नूपुर शबद सुनि काने, कखन होयत परमाने ॥
कखन देखब भरि आँखी, रहय न धैरज राखी ॥
एखनुक एक छन मोही, कोटि कलप सम होही ॥
हर्षनाथ कवि भाने, आरत नहि परमाने ॥

(इत्युत्कण्ठामाटयति) ।

शोणितपुर लय जयबाक कृपा करु । (चित्रलेखाक पाएर पर खसैत छथि) ।

चित्र० - (आलिङ्गन कय बैसाय) की अनुग्रहो मे प्रार्थना होइछ ? एहने होयत। (अनिरुद्धक संग जयबाक अभिनय करैत छथि ।)

चित्र० - देखू, यादव-नन्दन ! शोणितपुर आबि गेलहुँ । ई थिक प्रियसखीक एकान्त सुतबाक घर । तेँ एतय अहाँ रहू । हम प्रियसखीकेँ अनैत छी । (बहार भेलि ।)

अनि० -

[गीत सं० - २३]

परमाने = विश्वास । कोटि कलप सम = कड़ोरो कल्पक समान ॥

(उत्कण्ठाक अभिनय करैत छथि ।)

(ततः प्रविशति चित्रलेखा)

चित्र०—इअं पुप्फवाड़िआ, एत्थ पिअसही हुविस्सदि, ता एत्थ पविशामि । [इयं पुष्पवाटिका, अत्र प्रियसखी भविष्यति तदत्र प्रविशामि ।] (इति प्रवेशमभिनयति)।

(ततः प्रविशति उषा रामा च ।)

उषा—कधं अज्जावि ण आअदा पिअसही चित्तलेहा । [कथमद्यापि नागता प्रियसखी चित्रलेखा ?]

रामा (निपुणन्निरूप्य सहर्षं)पेक्ख पेक्ख, इअं आअदा सा ।[प्रेक्षस्व, प्रेक्षस्व, इयमागता सा ।]

उषा—(दृष्ट्वा सहर्षमालिङ्ग्य) सहि ! चिरेण लोअणाणि सीदलेसि । कधेहि, आणीदो सो जणो ? [सखि ! चिरेण लोचने शीतलयसि । कथय कथय, आनीतः स जनः ?]

चित्र०—अध इं ? [अथ किम् ।]

उषा—कहिं चिट्ठदि ? [कुत्र तिष्ठति ।]

चित्र०—तुज्झ शअणघरे चिट्ठदि । ता तुमं पि अहिसारोचिद-वेशं कदुअ

[तखन चित्रलेखा प्रवेश करैत छथि ।]

चित्र० - ई फुलवाड़ी थिक, एतय प्रियसखी होयतीहि, त एतय प्रवेश करैत छी । (प्रवेशक अभिनय करैत छथि ।)

[तखन उषा ओ रामा प्रवेश करैत छथि ।]

उषा - कियेक एखन धरि प्रियसखी चित्रलेखा नहि अयलीहि ?

रामा—(नीकजकाँ देखि सहर्ष) देखू देखू, इयेह अयलीहि ओ ।

उषा - (देखि सहर्ष आलिङ्गन कय) बड़ीकाल पर आँखि जुड़ओलहुँ । कहू, अनलहुँ ओहि व्यक्ति कें ?

चित्र० - त आओर की ?

उषा - कतय छथि ?

चित्र० - अहाँक शयनगृह मे छथि । तें अहूँ अभिसारक उचित वेष बनाय

तत्थ अहिसर । [तव शयनगृहे तिष्ठति । तत्थमपि अभिसारोचितवेशं कृत्वा तत्राभिसर ।]

रामा— कल्याण, गीत सं० – २४

अभरन वसन करिअ तनु साजे,
त्वरित चलिअ सखि पहुक समाजे ॥
जखन शयनगृह करिअ पयाने,
छन भरि करब हृदय समधाने ॥
ठाढ़ि रहब मुख झाँपि लजाई,
हठहि बोलिअ जनु कोटि उपाई ॥
बहुविध विनति जनावथि प्रीती,
तखन करब सखि नेहक रीती ॥
रसमय हर्षनाथकवि भाने,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

उषा— सोहनी, गीत सं०--२५

हे सखि हे सखि ! परिहरि मोही,
करजोरि विनति करिअ हम तोही ॥
प्रथम समागम अधिक तरासे,
सुमरि सुमरि जिव उड़य हतासे ॥

ओतयक लेल प्रस्थान करू ।

रामा - [गीत सं० - २४]

अभरन वसन = गहना ओ कपड़ा । त्वरित = शीघ्र । पयान = प्रस्थान । हृदय समधाने = हृदय कें स्थिर कय धैर्य धरब ।।

उषा— [गीत सं०--२५

परिहरि = छोड़ि दिअ । तरासे = डर। पुलक भरय = आनन्दित होइछ । पहुगेहा = पतिगृह ।।

चलय न चरण सुझय नहि मोही,
शाम भरल तन की कहब तोही ॥
पुलक भरय पुनु काँपय देहा,
हम न जायब सखि हुनि पहुगेहा ॥
रसमय हर्षनाथकवि भाने,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

(ततः सख्यौ हस्तं गृहीत्वा बलान्नयतः। सा च सभयलज्जं शनैर्गच्छति।)

रामा—सहि चित्तलेहे! पेक्ख पेक्ख सहीए रूवं। [सखि! चित्रलेखे! प्रेक्षस्व प्रेक्षस्व सख्या रूपम्।]

चित्र०—(निपुणन्निरूप्य गायति)—

राग केदरा, गीत सं०--२६

चललि शयनगृह सुन्दरि, सजनी
नील बसन तनु साजि।
कनकलता जनि शैसल, सजनी
अविरल मधुकर राजि॥
खटिक बिन्दु अरु सिन्दुर सजनी
बिन्दु विराजित भाल।
जनि पङ्कज दल रवि शशि, सजनी
उदित भेल एक काल॥

[तखन दुहु सखी हाथ पकड़ि बलजोरी लय जाइत छथिन। आ ओ डर ओ लाज सँ मन्द-मन्द जाइत छथि।]

रामा - सखी चित्रलेखा! देखू देखू, सखीक रूप।

चित्र० - (नीकजकाँ देखि गबैत छथि)--

[गीत सं० - २६]

नीलवसन तनु = देह पर नील रंगक वस्त्र। कनक-लता = सोनाक लती पर। अविरल = सघन। मधुकर राजि = भौंराक समूह।

ललित दशन-रुचि अनुपम, सजनी
अधर नवल दल राज।
जनि बन्धूक कुसुम तर, सजनी
विकसित कुन्दसमाज॥
चरण जुगल अनुरञ्जित, सजनी
ललित जुगल—उरु शोभ।
गज-युग पाणि पसारल सजनी
जनि नव—पल्लव लोभ॥
जगजननी पदसेवक, सजनी
हर्षनाथकवि गाव।
रसमय लक्ष्मीश्वरसिंह सजनी
नृप बुझ मन दय भाव॥

अपि च—

मालवरागे गीतम्--२७

चललि केलिगृह सुन्दरि रे सखि कर गहि लेला।
प्रथम समागम मन गुनि रे, तनु पुलकित भेला॥
ललित कोर मुख-पङ्कज रे, छवि देत विशेषे।
जनि पूरण—शारद-शशि रे, दामिनि परिवेषे॥
चिकुर विरचि कसि बान्हल रे, मुख सुन्दर सारे।
अमिअ लोभ शशि—मण्डल रे, विषधर परचारे॥

खटिक बिन्दु = पतरखड़ीक ठोप। पङ्कज दल = कमलक पत्ती पर। रवि = सूर्य। शशि = चन्द्र। दशन-रुचि = दाँतक चमक। अधर नवल दल = ठोर नव पल्लव सन। राज = शोभित। कुसुम = मधुरीक फूलक। कुन्द-समाज = कुन्द फूलक पाँती। अनुरञ्जित = रङल। जुगल-उरु = दुनू जाँघ। गज युग = दू गोट हाथी। पाणि = सूँड़॥

आओरो,

[गीत सं० - २७]

तनु = देह। पुलकित = आनन्दित। ललित कोर = सुन्दर किनार (चाक रातक सीमा। मुख-पङ्कज = मुँहरूपी कमल। छवि =

युवजन मानस हाटक रे, अनुछन कर चोरी ।
तें जनि कुचयुग बान्हल रे, दिढ़ कञ्चुक डोरी ॥
हर्षनाथ कविशेखर रे रसमय इहो गावे ।
लछमीश्वरसिंह गुणमय रे, मन वय बुझ भावे ॥

(इति सख्यौ शयनभवनप्रवेशमभिनयतः ।)

अनि०—(दृष्ट्वा सहर्षं) कथमागतैव मत्प्रेयसी ? यावदेनां निरीक्ष्य लोचने शीतलयामि । (इति सानन्दरोमाञ्चं पश्यति ।)

(ततस्सख्यौ बाणपुत्रीमनिरुद्धाय समर्पयतः ।)

अनि०—(करे गृह्णाति ।)

रामा—(अनिरुद्धम्प्रति)—

राग इमन, गीत सं०--२८

सुपुरुष ! हृदय विचारि रे, सुनिअ वचन अवधारि रे ॥
धनि मोर किछु नहि जान रे, राखब हिनक अभिमान रे ॥

सुन्दरता । पूरण शारद-शशि = शरद ऋतुक पूर्णचन्द्र । दामिनि परिवेषे = बिजुरी सँ घेरल । चिकुर विरचि = केश कें गुहि । अमिअ-लोभ = अमृतक लोभें । शशि-मण्डल = चन्द्रमण्डल पर । विषधर परचारे = साँप चलैत अछि । युवजन-मानस = युवकक मनरूपी चोर। हाटक = रत्न । कुचयुग = दुनू स्तनकें । दिढ़ = कसिकय । कञ्चुक-डोरी = चोलीक डोरी सँ ।

(सखिओ शयनगृह मे प्रवेशक अभिनय करैत छथि ।)

अनिरुद्ध--(देखि सहर्ष) की आबि गेलीह हमर प्रिया ? तें आब हिनका देखि आँखि जुड़बैत छी । (आनन्द ओ रोमाञ्च सहित देखैत छथि ।)

[तखन दुहु सखी अनिरुद्धकें उषा समर्पित करैत छथि ।]

अनि० - (दुनू हाथ धरैत छथि ।)

रामा - (अनिरुद्धक प्रति)--

[गीत सं० - २८]

अवधारि = ज्ञान कय । धनि = धन्या नायिका । रोष = तामस ।

पड़य हिनक जओं दोष रे, करिअ ताकर नहि रोष रे ॥
सहय लाख अपराध रे सुजन करय नहि बाध रे ॥
हर्षनाथकवि भान रे, मिथिलापति रस जान रे ॥

अनि०- परमनुगृहीतोऽस्मि (इति शिरस्यञ्जलिं घटयति)।

(सख्यौ निष्क्रामत.) ।

उषा—(सलज्जमधोमुखी तिष्ठति ।)

अनि०—(उषाया मुखमुन्नमय्य)—

गीत मुलतानी--२९

बिरह दगध मोर तनु अनुमानी ।
वचन - सुधारस सिचहु सेआनी ॥
वसन दूर करु आनन चन्दा ।
नयन—चकोर मोर करु सानन्दा ॥
कर जोड़ि विनति करिअ हम तोही ।
एक बेरि नयन निहारिअ मोही ॥
अधर अमिअ रस करु परगासे ।
करिअ कृतारथ अनुगत दासे ॥
तुअ गुण बुझि अएलहुँ एहिठामे ।
परसनि भय परिपूरिअ कामे ॥

सुजन = उत्तम व्यक्ति । बाध = बाधा ॥

अनि० - अत्यन्त अनुगृहीत छी । (कर जोड़ि माथ मे लगबैत छथि ।)

[दुनू सखी चल गेलीहि ।]

अनि० - (उषाक मुँह उठाय) -

[गीत सं० - २९]

विरह-दगध = वियोग सँ जरल । तनु = देह कें । अनुमानी = विचारि । वचन-सुधारस = वचनरूपी अमृतक रस । सेआनी = चतुर नायिका । वसन = वस्त्र । नयन चकोर = आँखिरूपी चकोर

रसमय हर्षनाथकवि भाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

(इति शयने उपवेशयति ।)

(नेपथ्ये—इदो इदो पिअसही ।) [इत इतः प्रियसखी ।]

उषा—कथं पिअसहीओ आअच्छन्ति, ता अहम्पि गच्छेमि । [कथं प्रियसख्यावागच्छतः तदहमपि गच्छामि ।] (इत्युत्थाय प्रचलिता]।

अनि०—कथं गतैव प्रेयसी ? तदहमपि बहिर्भवनमाह्निककर्मणे गच्छामि। (इति निष्क्रान्तः)।

(ततः प्रविशतश्चित्रलेखा-रामे)

रामा—कथं पभादप्पाआ रअणी ? तहा हि– [कथं प्रभातप्राया रजनी । तथाहि—]

गीत ललित--३०

सखि सखि ! ललित समय लखु भोर ।
नागर नागरि, रइनि रङ्ग करि शयन करय प्रियकोर ॥

पक्षी (जे चन्द्रमाकें देखि प्रसन्न होइछ) । अधर-अमिअ रस=ठोररूपी अमृतक रसकें । अनुगत=शरणागत । परसनि=प्रसन्ना ॥

(ओछाओन पर बैसबैत छथि ।)

[नेपथ्य में--'एम्हरहि बाटें प्रियसखी' ।]

उषा—की प्रियसखी लोकनि अबैत छथि ? त हमहूँ जाइत छी । (उठि बिदा भय गेलीहि ।)

अनि०—की चले गेलीहि प्रिया ? तँ हमहूँ बाहरक घर मे नित्यकृत्यक हेतु जाइत छी । (बहार भय गेलाह)

[तखन चित्रलेखा ओ रामा प्रवेश करैत छथि ।]

रामा—की भिनसरबा राति भय गेल ? जेना कि—

[गीत सं०— ३०]

नागर नागरि=नायक नायिका । रइनि-रङ्ग=रातुक केलि ॥

धीवर अङ्क, मयङ्क तरणि चढ़ि शशिकर जाल पसार ।
उडुगन-मीन बझाए चलल जनि, गगन पयोनिधि पार ॥
रवि कर कलित तिमिर-पट-मोचन, प्रकट अरुण-तनु भास ।
लाज पुरुब दिश, मुनल कुमुद दृश, लखि कमलिनि कर हास ॥
मलय पवन कम्पिततनु कमलिनि, कोप अरुण करि अङ्ग ।
उपगत मधुकर, करय निरादर, कुमुदिनि-सङ्ग पिशङ्ग ॥
पति वञ्चित-रति, युवति विकल मति, कर त सौति अभिशाप ।
पति-गञ्जन सहि, विविध वचन कहि, करत दोष अपलाप ॥
गुञ्जत मधुप, विहङ्गम कूजत, शयन कुशल जनि भाष ।
हर्षनाथ कवि वचन सुधारस, विरल रसिक जन चाष ॥

इदाणीम्पि पिअसही सअणघरादो ण आअदा । (पुनर्निरूप्य)

धीवर-अङ्क=चन्द्रमाक कलङ्क (कालिमा) रूपी मलाह । मयङ्क-तरणि=चन्द्रमारूपी बेड़ (नाओ) पर । शशिकर-जाल=चन्द्रमाक किरणरूपी जालकें । उडुगन-मीन=तरेगनरूपी माछ । गगन-पयोनिधि=आकाशरूपी समुद्रक ॥ रवि=सूर्य । करकलित=हाथ (किरण) सँ पकड़ि कय । तिमिर-पट-मोचन=अन्धकाररूपी वस्त्रकें हटयबाक हेतु । अरुण-तनु भास=लाल देह (अनुरक्त) शोभित छथि । पुरुब दिश=पूर्वदिशा (नायिका) कुमुदिनीक फूलरूपी आँखि मुनि लेलक ॥ मलय पवन=दछिनाही हवा सँ कँपाओल देहवाली कमलिनी । कोप अरुण=क्रोध सँ लाल । उपगत मधुकर=आयल भौंरा कें (भोर मे उपस्थित नायककें) । कुमुदिनि सङ्ग-पिशङ्ग=कुमुदिनीरूपी नायिकाक समागम सँ तल्लीन भूरा रंगक (भौंरा कें) ॥ पतिवञ्चित रति=पतिक द्वारा समागम सँ वञ्चित (छल कयल गेल)। पति गञ्जन सहि=नायक नायिकाक फज्झति सहि कें । दोष अपलाप=नायक अपन दोषकें नठैत छथि ॥ मधुप=भौंरा । विहङ्गम=पक्षी । शयन=सतबाक, शयनगृहक ॥

एखन धरि प्रियसखी शयनगृह सँ नहि अयलीहि अछि । (फेर

कथं आअदाज्जेव ? [इदानीमपि प्रियसखी शयनगृहादागता । कथ-मागतैव ?]

उषा—(झणझणन्नूपुरं सख्यावालिङ्गति ।)

रामा—सहि ! कधेहि कधेहि, पढ़म सग्गम वुत्तम् । [सखि कथय प्रथमसमागमवृत्तम् ।]

उषा—(गीतेन)—

ललित, गीत सं०—३१

मन दय सुनिअ वचन सखि आजे ।
सुपहु समागम कहितहुँ लाजे ॥
रसमय पहु अञ्चल गहि लेला ।
लाज बदन मोर अवनत भेला ॥
जखन अधर रस कयलनि पाने ।
लाज चिकुर कुजि कयल पयाने ॥
कुचयुग परसि कएल हँसि कोरा ।
लाज लजाए पड़ाइलि मोरा ॥
सुमरि सुमरि सखि ! तसु व्यवहारे ।
गदगद स्वर पुलकित तनु भारे ॥
रसमय हर्षनाथकवि भाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

देखि) की आबिये गेलीहि ?

उषा—(पायल कें झनझनबैत दुहू सखीकें आलिङ्गित करैत छथि ।)

रामा—सखी ! कहू कहू, प्रथम-समागमक वृत्तान्त ।

उषा—(गीतक द्वारा)- [गीत सं० - ३१]

अवनत = झुकल । लाज चिकुर = लाज सँ केश खुजि । पयाने = विदा भेल । कुचयुग परसि = दुनू स्तनक स्पर्श कय । कोरा = अङ्कमे । लाज लजाए = लज्जा स्वयं लज्जित भय। पुलकित तनु = आनन्दित शरीर ॥

रामा—सहि बाणपुत्ति ! तुज्झ तादस्स घरे कलअलो सुणीअदि, ता वअंपि गच्छह्म [सखि बाणपुत्रि ! तव तातस्य गृहे कलकलः श्रूयते । तद्वयमपि तत्र गच्छामः ।]

(इति निष्क्रान्ताः) ।

॥ इति अनिरुद्धसमागमो नाम तृतीयोऽङ्कः ॥

★

अथ चतुर्थोऽङ्कः

(ततः प्रविशति बाणासुरः)

बाणासुरः—कः कोऽत्र भोः !

द्वारी—(प्रविश्य) जअदु जअदु देओ । एसोऽह्मि, आणवेदु देओ । [जयतु जयतु देवः । एषोऽस्मि, आज्ञापयतु देवः ।]

बाणः—कथय मदन्तःपुरवृत्तम् ।

द्वारी—(गीतेन कथयति)

रामा—सखी बाणपुत्री ! अहाँक पिताक घर मे हल्ला सुनि पड़ैछ त हमरहु-लोकनि चली ।

[सभ बहार भेलि]

॥अनिरुद्ध-समागम नामक तेसर अंक समाप्त ॥

चारिम अङ्क

[बाणासुर प्रवेश करैत छथि ।]

बाण—क्यो अछि ?

द्वारी—(प्रवेश कय) जय हो, जय हो देवक । इयेह छी, आज्ञा देथु देव ।

बाण—कहह हमर ड्योढ़ीक (अन्दरक) समाचार ।

द्वारी—(गीतक द्वारा कहैछ)—

नट रागे, गीत सं०--३२

कि करब नीच - कथा परगास,
कहि न सकिअ किछु, होअ तरास ॥
नागर एक मनोभव— वेश,
कयल कुमरि - मन्दिर परवेश ॥
भेलिह तनिक वश राजकुमारि,
एतबा अयलहुँ नयन—निहारि ॥
किकरिअ मन गुनि एकर विचार
राजकुमरि भेलि कुलक अङ्गार ॥
हर्षनाथ कवि मन दय गाव,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझु भाव ॥

बाणः - हा हतोऽस्मि !! महति कुले कलङ्को जातः । (सवैक्लव्यम्) --

लब्धा शुद्धकुले भक्तिस्सुविहिता सेवा मृडानीपते
र्निर्जित्यामरदैत्यदानवकुलं लब्धः प्रतापोऽधिकः ।
भ्रातृत्वं शरजन्मनोऽप्यधिगतस्तस्यापि मे मानुषात्
सञ्जातं कुलधर्षणं खलु अहो चित्रा गतिः कर्मणाम् ॥१२॥

[गीत सं० - ३२]

तरास = डर । नागर = चतुर युवक । मनोभव-वेश = कामदेवक रूपमे (अतिसुन्दर) । कुमरि-मन्दिर = कुमारी उषाक घर मे ॥

बाण—हाय मुइलहुँ !! महान् कुलमे कलङ्क लागल ! (विकलता पूर्वक):—

शुद्ध कुल मे जन्म पाबि पार्वतीपतिक (महादेवक) सेवा कएल, सकल देवता, दैत्य ओ राक्षस कैं जीति पैघ प्रताप पाओल। कार्त्ति-केयक भाए होएबाक गौरव सेहो प्राप्त कएल। एहन यश पओनि-हारो हमरा मनुष्य सँ कुलक गञ्जन भेल ! हाय!! कर्मक गति विचित्र छैक ॥१२॥

अपि च—

ललित रागे, गीत सं०--३३

कओन दुरित फल बिह भेल बंके,
एहन पवित्र कुल भेल कलंके ॥
कि करब आब कुलक अभिमाने,
से जनमलि जे कटलक काने ॥
सुर नर मुनिगण परिजन साथे,
कोन परि उपर करब हम माथे ॥
मन कर गरल करिअ हम पाने,
अगिनि गमन करि तेजिय पराने ॥
हर्षनाथ कवि मन दय गावे,
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझु भावे ॥

(पुनस्सक्रोधं करान् करैः प्रपीड्य)—

वसन्त रागे, गीत सं०--३४

सहस्रभुज मोर करि अनादर, कयल कुल अपमान ओ ।
जेहन जे जन परम दुर्जन, हरब तनिक परान ओ ॥
दैत्य दानव यक्ष राक्षस, देवगण लय साथ ओ ।
तनिक होथि सहाय जओं पुनु, सभक कटाब माथ ओ ॥

आओरो, [गीत सं०—३३]

दुरित = पाप । बिह भेल बंके = विधाता विपरीत भेलाह । गरल = विष ॥

(फेर क्रोधपूर्वक हाथकें हाथसँ दाबि)—

[गीत सं०—३४]

सहस्रभुज मोर = हजार भुजावला जे हम तकरा । दैत्य = राक्षस जे दितिक सन्तान अछि । दानव = राक्षस जे दनुक सन्तान अछि । यक्ष = देवयोनिविशेष । राक्षस = देवयोनिविशेष जे निकषाक सन्तान

हमर भुजडर असुर सुर नर, सभक कम्पित गात ओ ।
के एहन जग माह, जे जन करथि नहि प्रनिपात ओ ॥
करब आज अन्हार दहदिस, विशिख लय रण जाए ओ ।
हर्षनाथ विचारि मन, गिरिजा चरण हिअ लाए ओ ॥

(पुनः सक्रोधं) शृणु रे द्वारिन् ! सत्वरमाह्वयाहि किङ्करसैन्य-समुद्योगाय ।

द्वारी—तथा । [तथा ।] (इति निष्क्रान्तः ।)

(नेपथ्ये—भो भोः किङ्करादिगणाः ! सौधं वेष्टयित्वा सज्जोभवन्तु भवन्तः ।)

(पुनर्नेपथ्ये—वेष्टितमस्माभिस्सर्वमन्तःपुरम् ।)

बाणः—कथमागतं किङ्करसैन्यम् ?

(पुनर्नेपथ्ये - प्रहरन्तु प्रहरन्तु भवन्तः । एष रक्षितस्करः परिघभ्रामयंस्तिष्ठति ।)

बाणः - कथमुपक्रान्तमेव युद्धम् ? तदहमपि तस्य दैवहतकस्य पराक्रमं गत्वा

अछि । असुर = दैत्य । गात = शरीर । जगमाह = संसारमध्य । प्रनिपात = पाएर पर माथ झुकबैत छथि । दहदिस = दसो दिशा । विशिख = बाण । रण = युद्धक्षेत्र ।

(फेर क्रोधकय) सुन रे द्वारपाल ! झटदय जो, सेवक ओ सेनाक उद्योगक हेतु ।

द्वारी—बेस । (बहार भय गेल ।)

[नेपथ्य मे—'हे हे सेवकलोकनि ! कोठाकें घेरि अहांलोकनि तैयार रहू' ।]

[फेर नेपथ्य मे – 'हमरासब ड्योढ़ीकें घेरलहु' ।]

बाण—की सेवक-सैन्य आबि गेल ?

[फेर नेपथ्यमे—'मारू मारू अहांसभ । ई चमचोर लोहाक डण्टा घुमाय रहल अछि' ।]

बाण—की युद्ध लगिए गेल ? त हमहूं ओहि अभगलाक पराक्रम जाय देखि-

पश्यामि । (इति निष्क्रान्तः) ।

(ततः प्रविशति परिघपाणिरनिरुद्धः)

अनि० - एषोऽहमसुरकुलं नाशयामि । अथास्मद्विक्रमं पश्यन्तु लोकाः ।
(नेपथ्ये - हा हदद्धि !! अज्जउत्तस्य का अवत्था हुविस्सदि ! [हा हताऽस्मि ! आर्यपुत्रस्य का अवस्था भविष्यति ?]

अनि० - कथमियमस्मत्प्रेयसी बाणसंग्रामसमुद्योगमाकर्ण्य भयविह्वला किमपि विलपन्ती इत एवाभिवर्तते । तथाप्येनां समाश्वासयामीति । (तांप्रतीक्षमाणस्तिष्ठति ।)

(ततः प्रविशत्युषा । पुनर्हा हदद्धि' [हाहताऽस्मि । [इत्यादि पठति)

अनि० - प्रिये न भेतव्यम् ।

(दोहा)

बाण सहित जत असुरगण, सभक करब हम नाश ।
अचिर मिलब हम तोहि पुनु, सुन्दरि तेजह त्रास ॥

थैक । (बहार भय गेलाह ।)

[तखन हाथमे लोहाक डण्टा लेने अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि ।]

अनि०—इएह हम दैत्यवंश कें नष्ट करैत छी । आइ हमर पराक्रम देखओ लोकसभ ।

[नेपथ्य मे—'हाय मुइलहुं !! आर्यपुत्रक की अवस्था होयतनि !']

अनि०—की ई हमर प्रेयसी उषा बाणासुरक युद्धकरबाक उद्योग सुनि डरें विकल भेलि किछु विलाप करैत एम्हरहि अबैत छथि ? त एनेक हिनका आश्वासन दैत छी । (हुनक प्रतीक्षा करैत ठाढ़ रहैत छथि ।)

[तखन उषा प्रवेश करैत छथि । फेर 'हा हताऽस्मि' इत्यादि बजैत छथि ।]

अनि०—प्रिये ! डर जनु करो । (उषा कें आश्वासन दय शीघ्र युद्धक हेतु बहार भय गेलाह ।)

(इत्युभौ समाश्वास्य सत्वरं युद्धाय निष्क्रान्तः)

उषा – कधं गदो अज्जउत्तो, ता अहंपि देईं प्पसादेदुं गच्छेमि [कथं गत आर्य्यपुत्रः? तदहमपि देवीं प्रसादयितुं गच्छामि ।] (इति निष्क्रान्ता।)

[अथ विष्कम्भकः]

(ततः प्रविशति चित्रलेखा)

चित्रलेखा– कधं रणवुत्तं विजाणिदुं पेसिदो चारो चिराअदि । [कथं रणवृत्तं विज्ञातुं प्रेषितश्चारश्चिरायते ।] (पुनस्सर्व्वतोऽवलोक्य) अअं आअदो ज्जेव । [अयमागत एव ।]

(ततः प्रविशति चारः)

चारः – इयं चित्रलेखा । यावदुपसर्पामि (इत्युपसर्पति) ।

चित्र० – कधेहि कधेहि, रणवुत्तम् । [कथय कथय रणवृत्ताम् ।]

चारः – शृणु सर्व्वम् –

गीत लाउनि–३४

रथ चढ़ि बाण-महासुर आयल, लय चतुरङ्ग बल धीरे ।
कर गहि परिघ असुर-कुल मारल, अनिरुध यादव वीरे ॥१॥

उषा—की चल गेलाह आर्यपुत्र ? त हमहू देवीकें प्रसन्न करबाक लेल जाइत छी । (बहार भय गेलि ।) ॥

[विष्कम्भक]

[तखन चित्रलेखा प्रवेश करैत छथि ।]

चित्र० – युद्धक समाचार बुझबाक हेतु पठाओल दूत किएक देरी करैत अछि ? (फेर चारुभर देखि) इएह त आबिए गेल ।

[चार प्रवेश करैछ ।]

चार—ई चित्रलेखा छथीह । त आब समीप जाइत छी । (समीप जाइत छथि ।)

चित्र०—कहह कहह, युद्धक समाचार ।

चार—सुनू सबटा ।

[गीत सं०—३५]

१ चतुरङ्गबल=हाथी घोड़ा रथ ओ पएदल एहि चारू अङ्ग सँ युक्त

चित्र० – (सहर्षं) उज्जीविदह्मि । तदो तदो । [उज्जीविताऽस्मि । ततस्ततः ।]

चारः—

काम-तनय डर सकल पड़ायल, जत छल रिपुदल वीरे ।

चित्र० – (सहर्षं) इअं पारिदोसिअं गेण्ह [इदं पारितोषिकं गृहाण] (इत्यङ्गुरीयकन्ददाति) । तदो तदो [ततस्ततः] ।

चारः –

नयन निरखि कहुँ कुपित भेल पुनु, बाण-नृपति रण-धीरे ॥२॥

चित्र० – हा संसइदह्मि । तदो तदो [हा संशयितास्मि । ततस्तः ।]

चारः –

जगभरि जनिक समान आन नहि, रिपुकुल कम्पित जाही ।
नागपाश लय दृढ़कय बँधलक, कयल अपन वश ताही ॥३॥

चित्र० – (सवैक्लव्यं) हा हदह्मि । तदो तदो । [हा हताऽस्मि । ततस्ततः ।]

चारः—

कामतनुज तन कम्पन उपजत, तेज न निय अभिमाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥४॥

चित्र०—तदो तदो । [ततस्ततः ।]

सेना । धीरे=धैर्यवान् । परिघ=लोहदण्ड ॥

चित्र०—(सहर्ष) प्राण घुरि आयल । तखन ?

चार – कामपुत्र अनिरुद्धक डरेँ सभ शत्रुपक्षक वीर भागि गेल ।

चित्र० – (सहर्ष) ई इनाम लएह । (औंठी दैत छथि ।) तकर बाद ?

चार— अपना आँखि सौं ई देखि पराक्रमी राजा बाण कुपित भेलाह ॥२॥

चित्र० – हाय ! संदेह मे पड़लहुँ । तखन ?

चार—रिपुकुल=शत्रुगण । कम्पित जाही=जनिका सौं थरथराइत अछि । नागपाश=सर्पबन्धनी । दृढ़कय=कसिकय ॥३॥

चित्र० – (विकलतापूर्वक) हाय मुइलहुँ ! तखन ?

चार – काम तनुज=कामक पुत्र (अनिरुद्ध) केँ । तन=देह मे । निय अभिमाने=अपन गर्व ॥४॥

चित्र० – तकर बाद ?

चार: - तदस्वानिरुद्धं हन्तुमुद्यतं बाणासुरं जामाताऽयं न हन्तव्य इति कुम्भाण्डो निवर्त्तयामास ।

चित्र० - सुट्ठु किदं मन्तिराएण । ता रणवुत्तं पिअसहीए णिवेदिदुं गमिस्सं । तुम पि पुणो तव्वुत्तं विजाणिदुं तत्थ अहिसर । सुष्ठु कृतं मन्त्रिराजेन । तद्रणवृत्तं प्रियसख्यै निवेदयितुं गच्छामि । त्वमपि पुनस्तद्वृत्तं विज्ञातुं तत्राऽभिसर ।]

चार: - तथा ।

(इति निष्क्रान्तौ)

(इति विष्कम्भक: ।)

(तत: प्रविशति नागपाशबद्धोऽनिरुद्ध:)

अनि०—(सर्पबन्धनबाधान्नाटयन् स्वगत) किमिदानीमनुष्ठेयं, कथं बन्धमोक्षो भविष्यति ? (विमृश्य) भगवत्या दुर्गाया: प्रसादमन्तरेण को वा प्रती-

---

चार - तखन अनिरुद्धकें मारबाक हेतु तैयार बाणासुरकें मन्त्री कुम्भाण्ड रोकलथिन्ह जे 'ई जमाय थिकाह' हिनका मारब उचित नहि'।

चित्र० - बड़दीब कयलनि मन्त्रिराज। त युद्धक समाचार प्रियसखी कें निवेदित करबाक लेल जाइत छी। तोंहू फेर ओहि समाचारकें बुझबाक लेल ओतय जाहु ।

चार - बेस ।

[दुनू गोटा बहार भेल ।]

[विष्कम्भक[1] समाप्त]

[आब नाग-फानी मे जकड़ल अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि ।]

अनि०—(साँप सँ बान्हल रहबाक कष्ट प्रदर्शित करैत मनहि मन) एखन की करी, कोना बन्धन सँ छुटकारा होयत ? (विचारि) भगवती दुर्गाक

---

1 - भूत वा भविष्य कथांशक मध्यम-पात्र द्वारा वर्णन अंक मध्य वा अकान्त मे जे जोड़ल रहैछ से विष्कम्भक कहबैछ ।

कारो भविष्यति ? तद्भगवतीमुपश्लोकयामि । (साञ्जलिबन्धं प्रकाशम्)—

गीत सोरठ--३६

जय जय महिषविनाशिनि भगवति, सिंहगमनि जगदम्बे ।
त्रिभुवनतारिणि, विपदनिवारिणि, सकल भुवन अवलम्बे ॥
त्रिदश तपोधन, दनुज मनुज गण चिकुर निकर अभिरामे ।
तुअ पद चिन्तन, विमुख सतत मन, किदहु होएत परिणामे ॥
हमर दुरित मति, जानि सकल गति, करिअ न अतिशय रोषे ।
तनय रहित मति, करय अनलगति, कहिअ कक्कर थिक दोषे ॥
तुअ गुण निगम अगम हरिहर-विधि कहि न सकथि अनुपामे ।
अनेक जनम तप करथि जतन दय, तुअ पद दरशन कामे ॥
क्षमिय हमर अपराध कृपामयि, करिअ अभय वर दाने ।
गिरिनन्दिनि पदपङ्कज मधुकर, हर्षनाथ कवि भाने ॥

(इति ताध्यायति ।)

कृपाक बिना कोन प्रतीकार होयत ? त तावत् हुनकहि गोहरबैत छी। (कर जोरि सुनाय)—

[गीत सं०—३६]

महिष-विनाशिनि = महिषासुरक नाश कयनिहारि । सिंहगमनि = सिंह पर चलनिहारि ॥ त्रिदश तपोधन = देवता, ऋषि, दैत्य ओ मनुष्यसभक माथक केशक समूह भिड़ला सँ सुन्दर जे अहाँक चरण तकर ध्यान सँ विमुख जँ मन रहय तँ । किदहुँ = किछुओ(विपरीते) । परिणामे = फल । दुरित-मति = पापबुद्धि । रोषे = तामस । तनय = पुत्र । रहित मति = बुद्धिहीन । अनलगति = अनर्गल, अनुचित ॥ निगम-अगम = वेद ओ तन्त्रशास्त्र मे । हरि हर-विधि = विष्णु महादेव ओ ब्रह्मा । अनुपामे = जकर उपमा नहि हो ॥

(हुनक ध्यान करैत छथि ।)

(ततः प्रविशति भक्तिपरवशा दुर्गा)

दुर्गा - प्रसन्नाऽस्मि । तदभीष्टमभ्यर्थय ।

अनि० - नागबन्धनान्मुक्तिर्भवतु ।

दुर्गा - एवमस्तु । तथापि कृष्णागमनपर्यन्तमबद्धेनाऽपि त्वया बद्धवदुषित-
व्यम् । (इति निष्क्रान्ता ।)

अनि० - कथङ्गतेव जगदम्बा ? (विमृश्य सहर्षं) विनष्टम्मम सर्वबन्धनदुःखं
भगवत्याः प्रसादात् । तदिदानीम्मयाऽपि तच्चरणकमलन्ध्यायता
कृष्णागमनप्रतीक्षमाणेन कुत्रचिद्वर्तितव्यम् (इति निष्क्रान्तः) ।

इति अनिरुद्धबन्धमोक्षणो नाम चतुर्थोऽङ्कः ॥

अथ पञ्चमोऽङ्कः

(ततः प्रविशति चिन्ताकुलः कृष्णः)

कृष्णः - कथमनिरुद्धान्वेषणाय प्रेषितश्चारश्चिरायते ? (पुनस्सव्यतो विलोक्य)
अयमागत एव ।

[तखन भक्ति सँ पराधीन दुर्गा प्रवेश करैत छथि ।]

दुर्गा - प्रसन्न छी, तें अभीष्ट वरदान माङू ।

अनि० - नागबन्धन सँ छुटकारा होअय ।

दुर्गा - एहिना हो । तैयो कृष्णक अयबाधरि बिनु बन्हलो अहाँ बान्हल जकाँ
रही । (बहार भय गेलीह ।)

अनि० - की जगदम्बा दुर्गा चलि गेलीह ? (विचारि सहर्ष) भगवतीक कृपासँ
हमर सर्पबन्धनक दुःख नष्ट भेल । त एखन हमहूँ हुनक चरणकमलक
ध्यान करैत कृष्णक आगमनक प्रतीक्षा करैत कतहु रही ।

[बहार भय गेलाह ।]

॥ अनिरुद्धक बन्धन सँ छुटकारा नामक चारिम अङ्क समाप्त ॥

पाँचम अङ्क

[आब चिन्ता सँ व्याकुल कृष्ण प्रवेश करैत छथि ।]

कृष्ण—अनिरुद्धकें तकबाक हेतु प्रेषित दूत किएक देरी करैत अछि । (फेर
चारूकात देखि) इएह त आबिये गेल ।

(ततः प्रविशति चारः)

चारः - जयति जयति देवः ।

कृष्णः - कथय कुत्रापि मिलितोऽनिरुद्धः ?

चारः -

गीत लावनी--३७

जल थल कानन, जत हम जानल, खोहल कय परवेशे
तेजि सकल भय, परम यतन कय, कतहु न पाओल उदेशे ॥
पारिजात तरु हरि लय आनल तें सुरपति कँह रोषे ।
तें जनि कामतनय हरि लय गेल, ई होअ तर्क विशेषे ॥

(अथवा)

छिनक निरखि तनु, करब दोसर पुन, सुन्दर तनु निरमाने ।
ई जनि मन करि, लय गेल बिहि हरि ई हौत मन अनुमाने ॥
जे किछु बुझि भेल, से हम कहि देल, अपनहि करु अनुध्याने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥

कृष्णः—मन्दं वादीः । न देवता क्षुद्रमतयो भवन्ति । तत्पुनरेव गत्वाऽनिरुद्ध-
मन्वेषय ।

[तखन चार प्रवेश करैत अछि]

चार—कृष्णदेवक जय हो, जय हो ।

कृष्ण - कहह कतहु भेटलथुन अनिरुद्ध ?

चार - गीत सं० - ३७

थल = पृथ्वी पर । कानन = वन मे । सकल-भय = सब कथुक डर ।
यतन = यत्न । उदेशे = पता । पारिजात = पारिजातक गाछ कें इन्द्रक
वन सँ कृष्ण अनने छलाह । सुरपति कँह = इन्द्र कें । काम-तनय =
कामदेवक पुत्र अनिरुद्ध कें । हरि = हरण कय । तनु = देह । बिहि
हरि = विधाता हरण कय कें । अनुध्याने = बार बार चिन्तन ॥

कृष्ण—एना जनु बाजह । देवता क्षुद्रबुद्धि नहि होइत छथि । तें फेर जाय
अनिरुद्धक अन्वेषण करह ।

चारः—यथाज्ञापयति देवः। (इति निष्क्रान्तः।)

कृष्णः—(सवैक्लव्यं) यत्नेनाऽन्वेषितोऽप्यनिरुद्धो न मिलति। अन्तःपुरे च तद्विश्लेषप्रभवः कोलाहलो न निवर्त्तते। तत्किमत्र विधेयम ? (विमृश्याकाशे सस्मरणं) नारदद्वारा सर्वमवगन्तव्यं, स च सर्वत्रानुसरन् सर्वं जानाति (इति नारदं स्मरति)।

(ततः प्रविशत्याकाशमार्गेण नारदः)

गीत दादरा--३८

गगन-गमन मुनि लेल परवेश।
भाल तिलक शोभ धवलित केश॥
हाथ कमण्डलु दण्ड विराज।
आबथि नारद हरिक समाज॥
चौदह भुवन फिरथि सब ठाम।
अनुखन कलह देखन मन काम॥
बिनु मूल कलह करथि जे तूल।
कतय चलथि से लखि कहु मूल॥

चार—देव जे आज्ञा देथि। (बहार भय गेल।)

कृष्ण—(विकलतापूर्वक) यत्न पूर्वक अन्वेषण कयलो पर अनिरुद्ध नहि भेटैत छथि, ओ ड्योढ़ी मे हुनक दुःख सँ भेल अशान्ति नहि हटैत अछि। त एतय की करी ? (विचारि आकाश दिस स्मरण करैत) नारदक द्वारा सब किछु बुझि सकैत छी। ओ तँ सभठाम जाइत छथि ओ सब टा जनैत छथि। (नारदक स्मरण करैत छथि।)

[तखन आकाश बाटेँ नारद प्रवेश करैत छथि।]

[गीत सं० — ३८]

गगन गमन = आकाशगामी। भाल तिलक = कपार पर टीका। धवलित केश = उज्जर केश। अनुखन = सतत। कलह = झगड़ा। बिनु-

हर्षनाथ कवि मन दय गाब।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझु भाव॥

कृष्णः—(प्रणमति)।

नारदः—(शुभाशिषन्दत्वा) कथय कथय केन हेतुना स्मृतोऽस्मि ?

कृष्णः—केनापि हृतोऽनिरुद्धो न मिलति। तत्कथय, त्रिभुवनमटता भवता कुत्रापि दृष्टः ?

नारदः—बाणपुत्रीप्रियचिकीर्षया शोणितपुरं चित्रलेखया नीतः। तत्र च बाणासुरेण सह सङ्गरं कृत्वा नागपाशेन बद्धस्तिष्ठति।

कृष्णः—(ससम्भ्रमं) कथन्तत्र गन्तव्यम् ?

नारदः—बलभद्रप्रद्युम्नाभ्यां सह गरुडमारुह्य सत्वरङ्गन्तव्यम्। अहमप्याकाशमार्गेण गत्वा सङ्गरमालोकयन् चिरेण चक्षुषी शीतलयिष्यामि।

कृष्णः—तथेति (गरुडं स्मरति)।

(ततः प्रविशति पक्षवातकम्पिताखिलचराचरो गरुडः)

मूल = बिना कारणक। तूल = सरिय य। कहि कहु मूल = कारण देखि कैं।

कृष्ण—(प्रणाम करैत छथि।)

नारद—(शुभाशिष दय) कहु, कहु, कोन हेतुसँ हमर स्मरण कयल अछि ?

कृष्ण—ककरहु द्वारा हरण कयल गेल अनिरुद्ध नहि भेटैत छथि। से कहु, त्रिभुवन मे घुमैत अहाँ हुनका कतहु देखलियनि अछि ?

नारद—बाणासुरक पुत्री उषाक प्रिय करबाक इच्छा सँ चित्रलेखा हुनका शोणितपुर लय गेलि। ओतय बाणासुरक संग युद्ध कय नागपाश सँ बान्हल छथि।

कृष्ण—(हड़बड़ाइत) ओतय कोना जायब ?

नारद—बलभद्र ओ प्रद्युम्नक संग गरुड पर चढ़ि शीघ्र जायब उचित। हमहुँ आकाशमार्ग सँ जाय युद्ध देखैत बहुत दिन पर आँखि जुड़ायब।

कृष्ण—बेस। (गरुडक स्मरण करैत छथि।)

[तखन पाँखिक हवा सँ सभ चर-अचर केँ कम्पित करैत गरुड प्रवेश करैत छथि।]

गरुड़ः—जयति जयति देव. । किमर्थं स्मृतोऽस्मि ।

कृष्णः—(सादर) भ्रातरनिरुद्धमोक्षणाय शोणितपुरं गन्तव्यम् ।

गरुड़ः—तथा (उत्कण्ठां नाटयति) ।

कृष्णः—कथञ्चिरेणाऽऽहूतौ बलभद्रप्रद्युम्नौ नागतौ ? (पुनर्निरूप्य) एतावा-
गतावेव ।

(ततः प्रविशति बलभद्रः प्रद्युम्नश्च)

कृष्णः—(दृष्ट्वा ससम्भ्रमं बलभद्रप्रद्युम्नौ प्रति) अनिरुद्धमोक्षणाय सर्व्वैर-
स्माभिः शोणितपुरं गन्तव्यम् ।

बलभद्रप्रद्युम्नौ—एवमस्तु ।

(इति निष्क्रान्ताः) ।

(ततः प्रविशति बाणासुरः)

बाण०—कथञ्चिरेणाहूतो ज्वरो नेदानीमप्यागतः ? (पुनर्निरूप्य) अयमागत
एव ।

गरुड़ः—देवक जय हो, जय हो । कियेक स्मरण कयल अछि ?

कृष्ण—(सादर) भाइ ! अनिरुद्ध कें छोड़यबाक लेल शोणितपुर जयबाक
अछि ।

गरुड़—बेस । (उत्कण्ठाक अभिनय करैत छथि ।)

कृष्ण—बड़ीकाल बजाओल बलभद्र ओ प्रद्युम्न कियेक नहि अयलाह अछि ?
(फेर देखि) इयेह दुहू गोटा आबिये गेलाह ।

[तखन बलभद्र ओ प्रद्युम्न प्रवेश करैत छथि ।]

कृष्ण - (देखि हड़बड़ाय बलभद्र ओ प्रद्युम्नक प्रति) अनिरुद्धकें छोड़यबाक
हेतु हमरालोकनि सभकेओ शोणितपुर जायब ।

बलभद्र + प्रद्युम्न - एहिना हो ।

[सभ बाहर भय गेलाह ।]

[तखन बाणासुर प्रवेश करैत छथि ।]

बाण - बड़ीकाल बजाओल ज्वर एखनो धरि नहि कियेक आयल ? (फेर
देखि) इयेह आबिये गेल ।

(ततः प्रविशति ज्वरः)

गीत मालव--३९

अति उनमत्त भयङ्कर वेश,
रोगराज ज्वर देल परवेश ॥
तीनि चरण, तिनि मुख विकराल
नव लोचन, छओ बाहु विशाल ॥
नयन निमीलित आलस पाए,
हाथ भसम, अनुछन हफिआए ॥
चौदिश झुकि झुकि कय पञान,
जाहि परसय ताहि हरए परान ॥

ज्वरः - जयति जयति देवः । कथय, किमर्थमाहूतोऽस्मि ?

बाणः—बलभद्रप्रद्युम्नाभ्यां सह यदुप्रवीरः कृष्णोऽस्माभिर्योद्धुं समागतः ।
तदद्य भवता सर्व्वतस्सेनाव्यूहं विधाय रणभूमौ सावधानेन भवितव्यम् ।

ज्वरः—यथाऽऽज्ञापयति देवः । (इति निष्क्रान्तः) ।

बाणः - (सर्व्वतो विलोक्य) कथं गत एव रोगराजः । तदस्माभिरपि रथमा-
स्थाय रणभूमौ गन्तव्यम् । (इति निष्क्रान्तः) ।

[तखन ज्वर प्रवेश करैछ ।]

[गीत सं०—३९]

उनमत्त=नशा मे चूर । नव लोचन=नओटा आँखि । नयन-निमीलित
=आँखि मुनने । भसम=छाउर । अनुछन=हरदम । पञान=यात्रा ।
परसय=छुबय ॥

ज्वर—देवक जय हो, जय हो ।

बाण०—बलभद्र ओ प्रद्युम्नक संग यादव-वीर कृष्ण हमरासभक संग लड़बाक
हेतु अयलाह अछि । तैं आइ अहाँ सभदिस सँ सेनाक व्यूह (विन्यास)
बनाय युद्धक्षेत्र मे सावधानी सँ रहब ।

ज्वर—देवक जे आज्ञा । (बहार भय गेल ।)

बाण०—(चारूभर देखि) की चलै गेलाह रोगराज ? तँ हमरोसभ रथपर चढ़ि
रणभूमि जाइ । (बहार भय गेलाह ।)

(ततः प्रविशति चित्रलेखा)

चित्र० - बाणणिग्गहणिमित्तं सिरीकह्नो अआदो, ता इमं वुत्तं सहीए पिअअणे णिवेदिदुं गच्छेमि [बाणनिग्रहनिमित्तं श्रीकृष्ण आगतस्तदिदं वृत्तं सख्याः प्रियजने निवेदितुं गच्छामि। (इति गमनमभिनयति)।

(ततः प्रविशति अनिरुद्धः)

अनि० - कथमियं चित्रलेखा ? चित्रलेखे ! कथय शोणितपुरवृत्तान्तम्।

चित्र० - सिरीकण्हो आअदो दीसदि [श्रीकृष्ण आगतो दृश्यते]।

अनि० - तर्हि निगृहीत एव बाणः।

चित्र० - सव्वं सम्भावीअदि। [सर्व्वं सम्भाव्यते]।

(नेपथ्ये गीयते)

गीत झंझौटी सं०---४०

गरुड़ चढ़ि बलदेव संग लय, कामदेवक साथ ओ।
चक्र कर गहि धाए पहुँचल, शोणितपुर यदुनाथ ओ ॥

[तखन चित्रलेखा प्रवेश करैत छथि।]

चित्र०—बाणकेँ दमन करबाक हेतु श्रीकृष्ण अयलाह अछि, से ई समाचार सखीक प्रियलोक केँ सुनयबाक लेल जाइत छी। (जयबाक अभिनय करैत छथि।)

[तखन अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि।]

अनि०—की ई चित्रलेखा थिकीह ? चित्रलेखा ! कहू, शोणितपुरक समाचार।

चित्र० - श्रीकृष्णकेँ आयल देखैत छियनि।

अनि०—तखन तँ बाणक दमन भइये गेल।

चित्र०—सब सम्भव अछि।

[नेपथ्य मे गाओल जाइत अछि :—]

गीत सं०—४०

कर गहि=हाथमे लय। धाए=दौड़ि। यदुनाथ=कृष्ण। सङ्गर=

भेल सङ्गर अति भयङ्कर, बाण किङ्कर—सङ्ग ओ।
हनल रिपुदल समर अतिबल कयल ज्वर तनुभङ्ग ओ ॥
रोगराज - विलाप सुनि हरि, कयल तसु जिवदान ओ।
कहल बहुविधभाग तनु करि, फिरह सकल जहान ओ ॥
कुपित रथ चढ़ि बाण पहुँचल, घोर सङ्कर भेल ओ।
कृष्ण बाणक बाहु काटल छाड़ि दुइ भुज देल ओ ॥
बाण हरषित भेल पुनु, त्रिपुरारि सँ बर पाए ओ।
हर्षनाथ विचारि भन, गिरिजाचरण मन लाए ओ ॥

अनि०—(सहर्षं स्वगतं) नूनमयमस्मत्पितामहविजयो बन्दिजनैर्गीयते। (प्रकाशं) चित्रलेखे ! श्रुतमभवत्या ?

चित्र०—भद्दं सुदं। [भद्रं श्रुतम्।]

(पुनर्नेपथ्ये 'इत इतो भवन्तः'।)

चित्र०—कधं णारअ - णिद्दिट्ठ - मग्गो बलहद्द-पज्जुण्णेहिं सह सिरीकह्नो इदो ज्जेव्व अहिवट्टदि, ता अहंपि तस्स दंसणेण अज्ज लोअणाइं सीदलइस्सं। [कथं नारदनिर्दिष्टमार्गः बलभद्रप्रद्युम्नाभ्यां सह श्रीकृष्ण इत एवाभिवर्त्तते, तदहमपि तस्य दर्शनेनाद्य लोचने शीतलयिष्यामि।]

युद्ध। किङ्कर-सङ्ग=सेवक सहित। हनल रिपुदल समर=युद्ध मे शत्रुक सेना केँ मारलनि। ज्वर तनुभङ्ग=ज्वर केँ अङ्गभङ्ग। रोग राज-विलाप=रोगक राजा ज्वरक कानब। हरि=कृष्ण। बहुविध भाग तनु=देहक बहुतो भाग (खण्ड) कय। जहान=संसार। कुपित =तमसायल। घोर संगर=प्रचण्ड युद्ध। त्रिपुरारि सँ=महादेव सँ।

अनि०—(सहर्ष स्वगत) निश्चित ई हमर पितामहक विजय भाटसभक द्वारा गाओल जाइछ। (सुनाय) चित्रलेखा ! सुनल अहाँ ?

चित्र०—नीकजकाँ सुनल।

[फेर नेपथ्य सँ—"एम्हर बाटेँ अपने लोकनि"।]

चित्र०—की नारदक द्वारा रास्ता देखओला पर बलभद्र ओ प्रद्युम्नक संग श्रीकृष्ण एम्हरहि अबैत छथि ? तँ हमहूँ हुनक दर्शन सँ आइ आँखि जुड़ायब।

अनि०—एवमेवम् ।

(ततः प्रविशति बलभद्रप्रद्युम्नाभ्यां सह गरुडारूढः श्रीकृष्णो नारदश्च ।)

नारदः—एष नागपाशबद्धोऽनिरुद्धस्तिष्ठति । तदेनम्मोचयतु गरुडो नागपाशात् ।

गरुडः—तथा । (इत्युपसर्पति । नागाः पलायन्ते) ।

अनि०—एषोऽनिरुद्धोऽहं भवतः प्रणमामि ।

बलभद्रः—सर्व्वदा कल्याणमाप्नुहि ।

कृष्णः—क्व पुनरस्माकं स्नुषा बाणपुत्री ? चित्रलेखे ! प्रवेशय ताम् ।

चित्र०—तहा । [तथा] । (इति निष्क्रम्य तया सह प्रविशति) ।

चित्र०—एसा अह्माणं पिअसही बाणपुत्ती तुस्से पणमइ । [एषाऽस्माकं प्रियसखी बाणपुत्री युष्मान् प्रणमति ।]

बलभद्रः—सौभाग्यपात्री भूयात् ।

अनि०—अवश्य, अवश्य ।

[तखन बलभद्र ओ प्रद्युम्नक संग गरुड़ पर चढ़ल श्रीकृष्ण ओ नारद प्रवेश करैत छथि ।]

नारद—इयेह नागपाश मे बान्हल अनिरुद्ध छथि । से हिनका नागपाश सँ गरुड़ छोड़ाबथु ।

गरुड़—बेस । (लग जाइत छथि, नाग सभ भगैत अछि ।)

अनि०—इयेह हम अनिरुद्ध अहाँलोकनिकेँ प्रणाम करैत छी ।

बलभद्र—सभ दिन कल्याण प्राप्त करू ।

कृष्ण—आ हमरालोकनिक पुतोहु बाणपुत्री कतय छथि ? चित्रलेखा ! हुनका प्रवेश कराउ ।

चित्र०—बेस । (बहार भय हुनका संग प्रवेश करैत छथि ।)

चित्र०—ई हमरासभक सखी बाणपुत्री उषा अहाँसभ केँ प्रणाम करैत छथि ।

बलभद्र—सौभाग्यवती होथु ।

कृष्णः—देवर्षे नारद ! किमतः परं विधेयम् ?

नारदः—देव ! स्वजनसमाश्वासनाय बाणपुत्र्यनिरुद्धाभ्यां सह झटिति द्वारवती गन्तव्या ।

कृष्णः—एवमस्तु ।

(इति सर्व्वे गमनमभिनयन्ति)

नारदः—कथं कृतकार्य्यैर्युष्माभिः क्षणमात्रेण द्वारवती प्राप्ता ।

कृष्णः—सर्व्वम्भवतः प्रसादात् ।

(ततः प्रविशति पुरस्त्रीभिस्सह रुक्मिणी)

रुक्मिणी—(सहर्षं कृष्णम्प्रति) अज्ज सम्पण्णमणोरहा अहं बहुए बाणपुत्तीए दंसणेण । [अद्य सम्पूर्णमनोरथा अहं बध्वा बाणपुत्र्या दर्शनेन ।]

कृष्णः—एवमेतं, तदनया सममनिरुद्धं नीराजयतु भवती ।

रुक्मिणी—तधा । [तथा ।] (इति नीराजयति ।)

गीत चुमाओन आरती--४१

पुरब-जनम-तप समुचित, आज सुमङ्गल भेल ।
लय नागरि यदु-बालक, हरषित दरशन देल ॥

कृष्ण—देवर्षि नारद ! आब की करक चाही ?

नारद—देव ! अपनालोकक आश्वासनक लेल बाणपुत्री ओ अनिरुद्धक संग झटदय द्वारका चली ।

कृष्ण—एहिना हो ।

[सभ जयबाक अभिनय करैत छथि ।]

नारद—की कार्यसम्पादन कय अहाँलोकनि छने भरि मे द्वारका पहुँचि गेलहुँ ?

कृष्ण—सब अपनेक कृपा सँ ।

[तखन नगरनारीसभक संग रुक्मिणी प्रवेश करैत छथि ।]

रुक्मिणी—(सहर्ष कृष्णक प्रति) हम बधू बाणपुत्रीक दर्शन सँ पूर्णमनोरथ भेलहुँ ।

कृष्ण—से ठीके । त हिनका संग अनिरुद्धकेँ अहाँ आरती करू ।

रुक्मिणी—बेस । (आरती करैत छथि ।)

[गीत सं०—४१]

पुरब-जनम-तप = पूर्व जन्मक तपस्याक । नागरि = सुन्दरी नायिका

आनन्द भरल नगर भरि, भूषण वसन समारि ।
यदुपति-भवन गमन करि, कर कौतुक नर नारि ॥
कनक-कलस पुरहर करि, मणिमय दीप वराए ।
दूबि अक्षत कर लय कहुँ, चानन भवन निपाए ॥
नगर नारि यदु-बालक, नागरि सहित चुमाव ।
हर्षनाथ भन मन दय मिथिलापति बुझु भाव ॥

नारदः—(कृष्णम्प्रति) किन्ते भूयः प्रियमुपकरोमि ।

कृष्णः—अतःपरमपि प्रियमस्ति ? तथापीदमस्तु—

राजानः परिपालयन्तु वसुधान्धर्म्मे च सर्व्वे जनाः
स्वीयङ्कर्म्म समाचरन्तु समये वर्षन्तु धाराधराः ।
एतद्व्रत्तनिबद्धनाटकरसास्वादानुरक्ताश्चिरं
भूयासु निरुपद्रवास्सहृदया भूरस्तु धान्यान्विता ॥१३॥

नारदः—एवमस्तु ।

(उषा) । यदुबालक=अनिरुद्ध । बसन=वस्त्र । समारि=सजा कय । यदुपति-भवन=कृष्णक घर । कौतुक=उल्लास । कनक-कलस =सोनाक घैल । पुरहर=मङ्गल घट ॥

नारद—(कृष्णक प्रति) अहाँक आओरो अधिक प्रियकाज हम की करी ?

कृष्ण—एहू सँ अधिक प्रिय होइछ ? तैयो ई होअओ—

राजालोकनि पृथ्वीक नीकजकाँ रक्षा करथु, सभ लोक धर्म सँ अपन काज करओ, मेघ उचित समय पर बरिसओ, एहि कथानक सँ निबद्ध नाटकक रसास्वादन मे अनुरक्त सहृदयलोकनि उपद्रव-रहित (शान्तिमय) होथु ओ पृथ्वी धान्य सँ युक्त हो ॥१३॥

नारद—एहने हो ।

(इति निष्क्रान्तास्सर्व्वे)

इति द्वारवतीप्रत्यागमनो नाम पञ्चमोऽङ्कः ।

इति श्रीहर्षनाथकविविरचितमुषाहरणन्नाम नाटकम्परिपूर्णम् ॥

[सभ बहार भय गेल ।]

॥ द्वारका घुरब नामक पाँचम अङ्क समाप्त ॥

इति श्रीहर्षनाथ कविक बनाओल उषाहरण नामक नाटक पूर्ण भेल ॥

★★

परिशिष्ट

हर्षनाथकविक उत्कृष्ट गीत

१—श्रीवनदुर्गाक

जय जय विन्ध्यनिवासिनि ।
तनुरुचि - निन्दित - दामिनि ॥१॥
आनन शशधर - मण्डल ।
तीनि नयन, श्रुति कुण्डल ॥२॥
कनक - कुशेशय आसन ।
बसय निकट पञ्चानन ॥३॥
शंख चक्र निरभय वर ।
कर धर शशधर शेखर ॥४॥
तुअ पद पङ्कज मधुकर ।
हर्षनाथ भन कविवर ॥५॥

२—श्रीताराक

जय जय भयहरनि मञ्जु-
हासिनि ! मधु - दमन - कञ्ज-
आसन - शिव - सेवित - पद - कमल तारिणी ॥ध्रु०॥

नवल जलद मञ्जु भास,
ज्वलित प्रेत भूमिवास
मुण्डमाल अति विलास, विपदहारिणी ॥१॥

तीन नयन अरुन वरन,
विश्वव्यापि सलिल सरन।
ललित धवल कमल - युगल - चरणधारिणी ॥

लम्ब उदर खर्व रूप,
द्वीपि अजिन कटि अनूप ।
चपल - रसन विकट वदन, दुरितदारिणी ॥२॥
मुद्रापञ्च लसत माथ,
खड्ग काति दहिन हाथ ।
वाम मुण्ड कुवल मौलि, अक्षोभधारिणी ।
भनत हर्षनाथ नाम,
जनक नगर नृपति काम ।
पुरिअ परम करुणधाम, भक्ततारिणी ॥३॥

३ — श्री कृष्णजन्मोत्सव

(सोहर)

(पद) अविरल जलधर गरजत, घनरस बरिसत रे ।
दादुल संकुल रभसत दामिनि चमकत रे ॥ललना॥
(छन्द) तड़ित चमकत, जलद गरजत, करत दादुल सोर ओ ।
तिमिर सङ्कुल, करत आकुल, निशिथ भादव घोर ओ ॥१॥
(पद) अवतर देवकिनन्दन, जन सुख चन्दन रे ।
सुरनर मुनि कृतवन्दन, कंस-निकन्दन रे ॥ललना॥
(छन्द) अवतरल यदुकुल, कमल दिनकर, सकल जन सुखकन्द ओ ।
नन्द नयन, चकोर सम्मद, पुरन शारद चन्द ओ ॥२॥
(पद) अमल कमल दल गञ्जन, लोचन खञ्जन रे ।
त्रिभुवन आपद भञ्जन, जग अनुरञ्जन रे ॥ललना॥
(छन्द) जगत रञ्जन, विपदभञ्जन, वदनगञ्जित चान ओ ।
नवल जलधर, रुचिर तनुवर, विजित मृगमद मान ओ ॥३॥
(पद) नार-छिनाओल दगरिन कत धन पाओल रे ।
हरषित गोप बधूजन, सोहर गाओल रे ॥ललना॥
(छन्द) हरषि गावहिं, नगर नागरि, करहिं सुरनर जान ओ ।
सुनत निश्चल, रहत खगमृग, छुटत मुनिजन ध्यान ओ ॥४॥

(पद) मनि मानिक मुकता कत, कञ्चन अभरन रे ।
जत छल नन्द भवन धन, पाओल गुनिजन रे ॥ल०॥
(छन्द) तुरग गजरथ, कनक मानिक, रतन मुकता साथ ओ ।
पावि नटभट गणक चटवट, भेल सकल सनाथ ओ ॥५॥
(पद) सुरगण सहित पुरन्दर, करि शुभ डम्बर रे ।
देखन यदुकुल सुन्दर, आएल अम्बर रे ॥ल०॥
(छन्द) बरिस सुरगण, कुसुम परसन, मुदित पुलकित अंग ओ ।
देव-दुन्दुभि, बाजु अम्बर, होत मंगल रङ्ग ओ ॥६॥
(पद) हर्षनाथ भन मनदय, हरि परसन भय रे ।
करथु नृपति लक्ष्मीश्वर, जन धन उपचय रे ॥ल०॥
(छन्द) हर्षनाथ सनाथ करि, यदुनाथ त्रिभुवनधाम ओ ।
पुरथु मिथिला, नगर नायक सकल अभिमत काम ओ ॥७॥

उचिती

सुपुरुष हृदय विचारि रे ।
सुनिअ वचन अवधारि रे ॥१॥
सखि मोर परम अजान रे ।
राखब - हिनक अभिमान रे ॥२॥
परय हिनक जँओ दोष रे ।
करिअ तकर जनु रोष रे ॥३॥
सहय लाख अपराध रे ।
सुजन नेह नहि बाध रे ॥४॥
हर्षनाथ कवि भान रे ।
मिथिलापति रस जान रे ॥५॥
--(उषाहरण-गीत--२८)

४--नायिका वर्णन

देखल सुहागिन रामा ।
पुरल लोचनकामा ॥१॥

आनन शारद चन्दा ।
लखि मुनिहुक मति मन्दा ॥२॥
अनुपम भौंह कमाने ।
लोचन विषमय बाने ॥३॥
मधुर सुधारस भासे ।
रसमय बचन विलासे ॥४॥
कुचयुग पङ्कज काँती ।
रोमावलि अलि - पाँती ॥५॥
ऊरु कदलीसम सोहे ।
मन्द गमन मन मोहे ॥६॥
हर्षनाथ कवि भाने ।
मिथिलापति रस जाने ॥७॥

६--बिरह

अविरल सरस बरिस जलबिन्दु ।
जलधर निकर मगन भेल इन्दु ॥ ॥
कुन्द कुमुद परिमल लय चोर ।
सरस समय बह मलय समीर ॥२॥
नाचत शिखिगन उपवन जाए ।
पहु परदेश मोहि किछु न सोहाए ॥३॥
जे निश पहुसँग छन सम भान ।
से भेल तनि बिनु कलप समान ॥४॥
एहन निठुर पहु आब न गेह ।
अनुछन मदन दहन दह देह ॥५॥
रसमय हर्षनाथ कवि भान ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥६॥

७--प्रथम-समागम

प्रथम समागम जिव मोर काँप ।
जनि सर मदन चढ़ाओल चाप ॥१॥

हम न जाएब सखि सुपुरुष पास ।
सुमरि सुमरि हिय बढ़य तरास ॥२॥
कमल कली मधुकर अति जोरा ।
हरि पुनु केलिक करय निहोरा ॥३॥
हर्षनाथ सुपुरुष अविरोध ।
मालति छमित भमर सभ दोष ॥४॥

८--विरह

समय वसन्त पिआ परदेश ।
असह सहब कत विरह कलेश ॥१॥
सुमरि सुमरि पहु रहय न धीर ।
मदन - दहन दह दगध शरीर ॥२॥
अलिकुल गुञ्जित कुसुमित कुञ्ज ।
लागु नयन जनि पावक - पुञ्ज ॥३॥
शीतल पंकज चम्पक - माल ।
हृदय दहय जनि विषधरजाल ॥४॥
रसमय हर्षनाथ कवि भान ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥५॥

९--उत्कण्ठा

हम कि कहब सखि तोरा, चित चोरा
आनि मिलाविअ मोरा ॥१॥
पहु बिनु चित नहि थीरे, नहि धीरे,
देह दह दहिन - समीरे ॥२॥
कओन कुमति मोहि भेला, बिहु बेला,
पहु बिमनस करि लेला ॥३॥
जे धनि कर गुरु माने, नहि जाने
तसु मन मनु कि पपाने ॥४॥

फेरि न करब इह काजे यदुराजे,
जओं पुनि होएत समाजे ॥५॥
हे सखि ! करहु उपाई, यदुराई,
एक बेरि देहु मनाई ॥६॥
हर्षनाथ कवि भाने, परमाने,
रस भावुक रस जाने ॥७॥

१०--सौन्दर्य

आज देखल एक कामिनि रे,
नव दामिनि रेहा ।
नील वसन लखि अवतह रे,
जनि जलद सन्देहा ॥
तड़ित बेकल होअ निअ रुचि रे,
परगासन कामा ।
तसु तनु लखि लज्जित होअ रे,
पुनु पुनु शतधामा ॥
विगत गिरिश - नयनानल रे,
जनि लज्जित चाने ।
तसु मुख लखि नहि वड़ जन रे,
सह निअ अपमाने ॥
अमल कमल दल गञ्जन रे,
लखि नयन विलासे ॥
जनि लज्जित भय खञ्जन रे,
कर बिपिन निवासे ॥
हर्षनाथ कविशेखर रे,
रसमय इहो गावे ।
लक्ष्मीश्वरसिंह गुणमय रे
मनदय बुझु भावे ॥

(११)

तड़ित लता सम सुन्दरि सजनी, देखल अति अभिराम ।
लोचन-युगल जुड़ाएल सजनी, लखि तसु तनु अनुपाम ॥१॥
वदन मनोरम राजित सजनी, लोचन - युगल विशेष ।
जनि सरसीरुह बैसल सजनी, मधुकर - युगल सुवेष ॥२॥
चलति रोमावलि विषधरि सजनी लोचन खञ्जन लाभ ।
लखि नासिक पन्नगरिपु सजनी, कुच गिरितट छपि शोभ ॥३॥
चरण रचत नव नूपुर सजनी, लागत अति अभिराम ।
जनि सरसिज-दल रवकर सजनी, मदकल मानस-धाम ॥४॥
जगत-जननि पद सेवक सजनी, हर्षनाथ कवि गाव ।
रसमय लक्ष्मीश्वरसिंह सजनी, नृप बुझु मन दय भाव ॥५॥

१२--विरह

आय अषाढ़ मदन तन बाढ़,
बरिसत मेघ विरह भेल गाढ़ ॥
गरजत घन तन लहरत मोर,
परदेश विलमहु नन्दकिशोर ॥१॥
रहब कोन भाँती,
आलि हुनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥ध्रु०॥
सावन सखि सब झूलत हिलोर,
केलि करहु सखि पिया संग भोर ॥
चुनरि भिजल सखि पहिरु बनाय,
विरह अधिक तन सहलो न जाय ॥२॥
सोचब दिनराती,
अलि हुनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥ध्रु०॥
भादव के घन गरजत घोर,
व्रज पर छाय घटा चहुँ ओर ॥
झिङ्गुर निशिदिन बोलत जोर
यौवन दादुर बोलय मोर ॥३॥

मदन मनोरथ माती,
अलि हुनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥ध्रु०॥
आसिन सखि हे आएल कन्त,
सुख सर से दुख भय गेल अन्त ॥
हर्षनाथ भन मन मे आस
प्रीति लगहु हो प्रीतम पास ॥४॥
जुड़ाएल छाती,
अलि हुनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥ध्रु०॥

१३

सखि ! सखि अनुगत भेल ऋतुराजे ॥ध्रु०॥
पिक कुल कल, अनुरञ्जित नवदल,
कुसुमित उपवन छाजे ॥१॥
अलि कुल कलित, ललित कुसुमाकुल,
विलसित वल्लि अनेके ।
एहन समय पहु, परदेस थिर रहु,
कि कहब तनिक विवेके ॥२॥
नृप-तनयापति, गोपसुता रति,
कए कोन परि यदुबाले ।
पसुपसुता-कृत, रहथि तिमिर नित,
विदित भेल से काले ॥३॥
तेजि गेल यदुपति, कयल उचित अति,
असित हृदय थिक बाँकि ।
कोकिल निज हित, अनुदिन परिचित,
नवदल तेजथि काके ॥४॥
धीरज धय रहु, अचिर मिलत पहु,
होएत विरह - अवसाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस,
हर्षनाथ कवि भाने ॥५॥

१४

सखि सखि कहिअ कओन परकारे ।
पहु परदेश गेल, सरस समय भेल, हनय मदन दुरवारे ॥१॥
भान किरन तन, दहय समीरन, चन्दन चम्पक दामे ।
कि करब के कहु, विमुख देखि विहु, सकल जगत भेल वामे ॥२॥
नलिन-विजन तन विषम गरल सन, श्रुति दह कोकिल गाने ।
मदन वेदन तन, असह सहब कत, छन छन निकसत प्राने ॥३॥
धैरज धय रहु, अचिर मिलत पहु, होयत विरह अवसाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥४॥

१५--अनुराग

कि कहब दुहुक प्रथम अनुरागे ।
प्रथम विलोकन अवधि दुहुक मन कत अनुछन रस जागे ॥१॥
मदन विषम शर, दलित दुहुक तन, दुहु मन बसु एक काजे ।
दुहुक मिलित मन, रहय सतत छन, आँतर भय रहु लाजे ॥२॥
विरह दहन कत, विषम पराभव, हृदय धरय जत गोई ।
खञ्जरीट चापल मद गञ्जन, नयन येकत तन होई ॥३॥
मलय पवन शशि किरन सरोरुह, परस दुहुक तन छीने ।
असह सहओ कत, रहय विकल नित, एकओ न अपन अधीने ॥४॥
प्रथम वचन नहि, कहय एकओ नहिँ, दुहु मन करि अभिमाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥५॥

१६--मान

करिअ न हृदय कठोर ।
अवगुन परिहरि परसनि भय धनि, (मानिनि) पूरिअ अभिमत मोर ॥१॥
सरस वसन्त निहारि जगत भरि, परिहरि प्रिय जन दोष ।
नागर नागरि रमय रइनि भरि, तेहि धनि तेजह न रोष ॥२॥

एक बेरि वचन अमिअ सम भाखिअ, पिक कुल तेजओ गान ।
सरस विलास हास परगासिअ, अमिअ तेजओ अभिमान ॥३॥
याचक जन नहि करय विमुख धनि, मन गुनि बुझिअ सेआनि ।
मधु तेजि मधुकर, फिरय कंटक डर, केतकि की थिक हानि ॥४॥
यामिनि बिति गेल, भोर समय भेल, आब तेजहु धनि मान ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस, हर्षनाथ कवि भान ॥५॥

१७--सौन्दर्य

माधव[1] देखल अपरुप रूपे ।
नील वसनि धनि, जलद वलित जनि, थिर रहु तड़ित सरूपे ॥ ॥
सिन्दुरबिन्दु भाल पर तापर, रचित चिकुर परिपूरे ।
राहुवदन बर जाए नुकाएल, तिमिर निकर जनि सूरे ॥२॥
नूपुर पद्मराग पद शिञ्जित, ललित नटन श्रुति कुञ्जे ।
नयन भेद कहु पुलक अंग महु, कनक विशेषक पुञ्जे ॥३॥
कुच युग कनक कलश मद गञ्जन निरखि उपजु मन शंका ।
तीनि भुवन जनि, जीति मदन जनि, कयल अधोमुख डंका ॥४॥
तसु तनु रचल मदन जनि रसमय, की रस लम्पट चाने ।
जप तप निरत सतत रस वञ्चित, की विहु रचत अजाने ॥५॥
नव-पल्लव गञ्जन मनरञ्जन, अधर बिम्ब निरमाने ।
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझथि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥६॥

१८ – नायिकाक अनुनय

किअ कौसलि मुख फेरि ॥ध्रु०॥
मुख सौं चीर दूर करि सुन्दरि, हरखि हेरु एक बेरि ॥ ॥
आनन मलिन निहारि तोहर धनि, घुमय फिरय सब ठाम ।
तुअ मुख चान चकोर मोर मन, कतहु न कर बिसराम ॥२॥

१—द्रष्टव्य-'माधवानन्द' गीत सं०—१५

चान किरन चम्पक दल चन्दन, कोकिल पञ्चमगान ।
तुअ बिगलित मन, हेरयित अनुछन, लागइछ अनल समान ॥३॥
मोर अपराध परल जँओ सुन्दरि, किअ परितेजहु हार ।
आनक दोष आन परि तेजहु, के कहु एहन विचार ॥४॥
यामिनि बिति गेल, भोर समय भेल, अबहु तेजु धनि मान ।
नृप लक्ष्मीश्वर सिंह बुझथि रस हर्षनाथ कवि भान ॥५॥

१९--नायिका-वर्णन

जाइत[1] देखल नव नागरि रे, नवकञ्चन रेहा ।
त्रिभुवन विजय मनोरथ रे, जनि रचल बिदेहा ॥ ॥
लसत कुटिल कच लोचन रे, के कहु उपमाने ।
मीन युगल बनसी लय रे, बेधल पचबाने ॥२॥
ललित कोर मुख पंकज रे, छवि देत विशेषा ।
जनि पूरन शारद शशि रे, यामिनि परिवेशा ॥३॥
युवजन मानस हाटक रे, अनुछन कर चोरी ।
तेँ जनि कुच-युग बान्हल रे, दृढ़ कंचुक डोरी ॥४॥
हर्षनाथ मनदय कहु रे, नागरि अनुपामा ।
पुरब जनम तप देखल रे, लोचन अभिरामा ॥५॥

१—द्रष्टव्य—'उषाहरण'—गीत सं०—२७ ।

